अग्निहोत्र : कृषि क्रान्ति

अग्निहोत्र : कृषि क्रान्ति

प्रकाशक : **नलिनी माधवजी**
महानुभाव श्री माधवजी संस्थान (न्यास)
माधवाश्रम, सीहोर रोड, बैरागढ़, भोपाल (म. प्र.)
फोन : 9827052445 / 9424621293

E-mail : agnihotraforme@gmail.com
Website : www.agnihotraindia.in

संपादक :
जयन्त पोतदार

तृतीय संस्करण : जून 2022

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : पचास रूपये

मुद्रक : गीता आफसेट
239, जोन 2, एम.पी.नगर, भोपाल
फोन : 0755 - 4251564 / 9826011207

अग्निहोत्र : कृषि क्रान्ति

सम्पादक : जयंत पोतदार

अग्निहोत्र : कृषि क्रान्ति

❖

सम्पादक - जयंत पोतदार

❖

प्रकाशक : नलिनी माधवजी
महानुभाव श्री माधवजी संस्थान (न्यास)
माधवाश्रम, सीहोर रोड,
बैरागढ़, भोपाल (म.प्र.)
फोन : 9827052445 / 9424621293

❖

तृतीय संस्करण : जून 2022

❖

सर्वाधिकार सुरक्षित

❖

मूल्य : पचास रुपये

❖

मुद्रक : **गीता आफसेट,**
239, जोन-2, एम.पी.नगर, भोपाल
फोन : 0755-4251564 / ३9826३112३7

संपादकीय

माधवाश्रम में पिछले 25 वर्षों से हर 27–28 जनवरी को एक वार्षिक सम्मेलन होता है। इन दो दिनों में विश्वव्यापक अग्निहोत्र आन्दोलन के जन्मदाता महानुभाव श्रीमान् माधवजी पोतदार साहब की इस कर्मभूमि में इस आन्दोलन से जुड़े स्वयंसेवी कार्यकर्ता एकत्रित होते हैं। इसमें, अग्निहोत्र के विभिन्न पहलुओं पर शोधकार्य करने वाले वैज्ञानिक एवं चिकित्सक भी आते हैं एवं अपने शोध–पत्र पढ़ते हैं।

जनवरी '97 में हुए इस वार्षिक सम्मेलन में अग्निहोत्र के चिकित्सा एवं कृषि पर होने वाले प्रभावों की विस्तृत चर्चा हुई थी। विशेषज्ञों ने इस विषय पर अपने निष्कर्ष एवं सुझाव सामने रखे एवं अग्निहोत्र आचरणकर्ताओं ने अपने अनुभव सुनाए। कानपुर कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों सर्वश्री डा. रामाश्रय मिश्रा, डा. ए.एन. पाण्डे तथा डा. आर.एल. श्रीवास्तव ने इस सभा में अपने अग्निहोत्र कृषि प्रयोगों का विस्तार से विवरण प्रस्तुत किया, वहीं एक अशिक्षित कृषक श्री प्रतापसिंह मीणा ने अपने अग्निहोत्र कृषि के अनुभव भी सुनाए। सभा में उपस्थित सैकड़ों कृषक व नागरिक यह सब देख–सुनकर रोमांचित हो उठे और यह मांग की गई कि इन सब बातों को तथा अग्निहोत्र से कृषि की पद्धति का मार्गदर्शन करने वाली एक पुस्तिका को जनहितार्थ प्रकाशित किया जाए।

माधवाश्रम द्वारा 1974 से ही कृषकों को अग्निहोत्र कृषि करने के लिए प्रेरित किया जा रहा था। मई 1974 में ही सत्य धर्म

प्रचार–प्रसार के मुखपत्र ''धर्मसूर्य'' के अंक में एक लेख प्रकाशित किया गया था ''आधुनिक कृषि और यज्ञ।'' इसके बाद समय–समय पर ''धर्मसूर्य'' के माध्यम से कृषकों को अग्निहोत्र कृषि के बारे में जानकारी पूर्ण लेख दिए गए। ''धर्मसूर्य'' के पहले लेख के आधार पर जर्मनी अमेरिका व अन्य यूरोपीय देशों में अग्निहोत्र कृषि पर प्रयोग–परीक्षण हुए और चौंकानेवाले तथ्य सामने आए। परंतु तब भी रासायनिक खादों एवं कीटनाशी दवाओं के आदी हो चुके भारतीय किसान इक्का–दुक्का ही इस क्षेत्र में आगे आए, जिनमें मुख्यतः मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र के कुछ किसान ही थे।

''धर्मसूर्य'' के माध्यम से माधवाश्रम ने 4 से 6 अप्रैल 1982 को एक ''अग्निहोत्र कृषि शिविर'' का आयोजन किया जिसमें मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश के कई किसान सम्मिलित हुए। कानपुर के कृषि वैज्ञानिक श्री रामाश्रय मिश्र के मार्गदर्शन में इन किसानों ने अग्निहोत्र कृषि की जानकारी प्राप्त की तथा उन्हें अग्निहोत्र कृषि का प्रशिक्षण भी दिया गया। अप्रैल का ''धर्मसूर्य'' का अंक कृषि विशेषांक के रूप में प्रसिद्ध हुआ। प्रस्तुत पुस्तक में उसी विशेषांक का आधार लिया गया है।

डा. रामाश्रय मिश्रा ने 1985 के बाद से अग्निहोत्र कृषि पद्धति के प्रचार को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया और तबसे वे निरंतर अनुसंधानरत हैं। मैं अनुभव को प्रत्यक्ष या परम प्रमाण मानता हूं इसलिए ''अग्निहोत्र कृषि क्रान्ति'' में पहले किसानों के प्रत्यक्ष अनुभव, फिर वैज्ञानिक प्रयोग और अन्त में वैदिक कृषि के सिद्धान्त दिए हैं। इन सिद्धान्तों के लिए मैं मेरे वयोवृद्ध मित्र (अब स्वर्गीय) पं. वीरसेन जी वेदश्रमी इन्दौर का आभारी हूं जिन्होंने मेरे अनुरोध पर

''धर्मसूर्य'' के लिए अग्निहोत्र कृषि व चिकित्सा पर कई लेख भेजे थे।

मैं स्वयं कृषक नहीं हूं और न ही कृषि कार्य में मेरी रूचि है परन्तु अग्निहोत्र कृषि से उत्पन्न अनाज, सब्जियों एवं फलों के अद्‌भुत अमृतोपम स्वाद का दीवाना हूं। इसलिये पाठकों से आग्रह है कि इस विषय पर वैज्ञानिक एवं प्रैक्टिकल जानकारी के लिए डा. रामाश्रय मिश्र से ही पत्रव्यवहार करें और अग्निहोत्र कृषि देखना चाहें तो श्री प्रतापसिंह मीणा के खेत पर जाकर देखें।

इस पुस्तक में कई लेख ज्यों के त्यों ''धर्मसूर्य'' मासिक–पत्र के अंकों से लिए गए हैं। माधवाश्रम का यह गौरवपूर्ण प्रकाशन 1972 से 1987 तक प्रकाशित होने के बाद अस्त हो गया। किन्तु सत्यधर्म प्रचार प्रसार के क्षेत्र में इसने जो प्रचण्ड कार्य किया उसका मूल्यांकन भविष्य ही कर सकता है। नियति ने मुझे इसके संपादन का अवसर दिया इसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूं।

कृषक भाइयो एवं बहनों से अंत में यही निवेदन है कि वे अधिक से अधिक संख्या में अग्निहोत्र कृषि पद्धति अपनाएं तथा सुख स्वास्थ्य एवं समृद्धि के लिए अपने द्वार खोलें। कल विवश होकर इसे अपनाने की बजाय आज स्वेच्छा से इसे अपनाकर जगत् के सामने एक आदर्श उपस्थित करने में ही बुद्धिमत्ता है इसमें सन्देह नहीं।

– जयंत पोतदार

अनुभव खण्ड

– ज्योति पोतदार

भोपाल के करीब ही है गांव मुगालिया हाट। गांव के 14–15 वर्ष के 4–5 बालकों की टोली ने माधवाश्रम से अग्निहोत्र कृषि के बारे में जानकर प्रयोग करने का तय किया। सन् 1979 था तब। ''धर्मसूर्य'' में छपे अमेरिका के प्रथम कृषि–प्रयोग ने उन्हें प्रेरित किया कि स्थानीय भूमि पर भी हमें यह आजमाना चाहिये। बाधाएं अनेक थीं पर किशोरों का उत्साह भी कम न था। किस भूमि पर प्रयोग हो? कौन राजी होगा अपना खेत बालकों के हवाले करने को? इस समस्या को हल किया आठवीं के एक विद्यार्थी जमनाप्रसाद ने। किसी तरह उसने अपने पिता को राजी कर लिया कि गांव के करीब की उनकी 4 एकड़ भूमि पर वह अपने ढंग से बोनी–कटनी करेगा, पिता बाधा न देंगे।

यों प्रयोग के लिए जमीन उपलब्ध हुई। जमनाप्रसाद के साथ पढ़ने वाले अन्य अग्निहोत्र आचरणकर्ता बालक फूलचन्द, राधेश्याम तथा इमरत ने राधेश्याम के बड़े भाई श्री किशोरीलाल के सहयोग व मार्गदर्शन में प्रयोग आरंभ किया। सभी बालकों के घर या तो उनके पिता या वे स्वयं ही नित्य अग्निहोत्र पिछले कुछ वर्षों से कर रहे थे।

15 अक्टोबर, पूर्णिमा के दिन व्याहृति–होम करके गेहूं की बोनी की गई और उसी दिन से खेत के चारों कोनों (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) तथा मध्य में नित्य अगिनहोत्र प्रारंभ हुआ। खेत उनके गांव से लगभग दो किलोमीटर दूर था। **सिंचाई का कोई साधन न**

था। ठण्ड का मौसम और बड़े बुजुर्गों की कोई प्रत्यक्ष मदद भी नहीं। परन्तु फिर भी बोनी से लेकर गेहूं काटने तक अर्थात् मार्च के मध्य तक खेत में पांच स्थानों पर नित्य सायं–प्रातः अग्निहोत्र हुआ। अमावस्या–पूर्णिमा के अलावा अन्य दिनों में भी कभी–कभी व्याहृति–होम होता। बालक प्रातः जल्दी उठकर खेत पर पहुंचते। वहां पड़ोसी के कुंए पर स्नान करते। फिर प्रातः अग्निहोत्र व उसके पश्चात् आधे घण्टे तक वेद–मंत्रों का उच्चारण करते। शाम को भी अग्निहोत्र के समय (सूर्यास्त) से आधे घण्टे पूर्व पहुंचकर नहा–धोकर अग्निहोत्र सम्पन्न होता और अन्धेरा होते तक घर लौटते। कच्चे रास्ते पर खेत था। कई बार रास्ते से आते–जाते किसान बालकों के इस कार्यक्रम का उपहास करते। गांव के लोग भी इसे पागलपन ही समझते।

गेहूं बोते समय अग्निहोत्र की थोड़ी राख मिलाई थी। रासायनिक खाद का कतई प्रयोग नहीं किया गया था। नित्य अग्निहोत्र की राख भी खेत में डाली जाती थी किन्तु सिंचाई के अभाव में वह जमीन में मिल नहीं पाई थी। जमनाप्रसाद का प्रयत्न था कि कुछ जोड़–तोड़ करके पड़ोस के कुएं से पानी लेकर सिंचाई करे, परन्तु यह संभव न हो सका। इस कमी की पूर्ति की वर्षा के पानी ने।

फरवरी में किशोरीलाल आया था माधवाश्रम। उसने बताया कि अत्यधिक वर्षा के कारण पूरे गांव की गेहूं की फसल में गेरूआ (एक रोग जिसमें गेहूं बहुत पतला पड़ जाता है और बालियाँ लाल हो जाती हैं) लग गया है। उसने हमसे कहा कि आप हमारे खेत को देखने आइये। हमारे अग्निहोत्र–प्रयोग वाले खेत में गेरूए का प्रभाव तनिक भी नहीं है।

संचालिका माधवाश्रम श्रीमती नलिनी माधवजी तथा मैं गाँव

पहुंचे थे, उन बालकों के साथ हम उनके खेत पर गये और वास्तव में मैं अचम्भित हुई यह देखकर कि जमनाप्रसाद के खेत से लगी हुई मेड़ों वाली तीन तरफ के खेतों की गेहूं की फसल गेरूए से लाल हो गई थी, वहीं इनके खेत की फसल इस रोग से एकदम अछूती थी। स्वस्थ फसल किसे कहते हैं यह देखने को मिला। चारों तरफ रोग होने के बावजूद इस खेत की रोग प्रतिकार क्षमता इतनी थी कि उस पर रोग का जरा–सा भी परिणाम नहीं हुआ था। बालकों ने हमें पूरा खेत घुमाया। वे अपने प्रयोग के परिणाम देखकर बहुत प्रसन्न थे। इस उपेक्षित खेत में इससे पूर्व इतनी स्वस्थ फसल खेत के स्वामी ने भी नहीं देखी थी।

इस लहलहाती भरपूर फसल को देखकर गांव वाले भी बालकों की प्रशंसा करने लगे थे। उन्होनें हमसे कहा भी कि केवल अपने बूते पर बच्चों ने यह प्रयोग किया है, हमारा इसमें जरा भी सहयोग नहीं रहा। गेहूं का स्वाद व दानों की चमक भी विशिष्ट थी। यह गेहूं उस समय भोपाल में चल रहे राष्ट्रीय कृषि मेले के अग्निहोत्र प्रदर्शनी के स्टाल पर प्रदर्शन हेतु रखा गया था।

इसी खेत में बरसात में धान की फसल भी ली गई बगैर किसी रासायनिक खाद के। हालांकि इस बार बरसात के कारण खेत पर अग्निहोत्र सम्पन्न न हो सका। मात्र अग्निहोत्र भस्म के प्रयोग से ही डेढ़ गुनी फसल प्राप्त हुई।

अग्निहोत्र से सब्जी उत्पादन

– शंकर आबाजी ऊर्फ बापू शिन्दे, सातारा (महाराष्ट्र)

मेरे पास कुल 2 एकड़ 26 डेसिमल खेत था। इसमें 1 एकड़ भूमि असिंचित थी। घर में सिर्फ एक बैल। खेत में लगने वाला सामान औरों से मांगकर अपना काम जैसे तैसे चलाता, परन्तु ठीक समय पर सामान मिल नहीं पाता। बच्चों की पढ़ाई का खर्च था। माली हालत खराब होने से लोगों की दृष्टि में मैं अयोग्य साबित हुआ था। बच्चों की पढ़ाई ढ़ंग से नहीं कर सका। 1975 में मेरे यहां अग्निहोत्र शुरू हुआ। मेरे मित्र श्री राजाभाऊ हमेशा कहा करते थो कि अब अपन अग्निहोत्र के द्वारा कृषि करें। पर मैं टालमटोल किया करता। फिर दो वर्ष बाद यह सिलसिला शुरू हुआ और हमारे जीवन में दैवी प्रसाद से सचमुच आमूल परिवर्तन हुआ। सभी तरह की फसल भरपूर आने लगी। एक साल तक हवन घर के पास वाले खेत पर किया फिर दूसरे में जो घर से 2–2½ मील दूर है वहां भी अग्निहोत्र व हवन शुरू किया। एक बार विश्वास निर्माण होने पर व्यक्ति कितनी ही व्यस्तता में से समय निकाल ही लेता है। कोई अड़चन नहीं बताता। इस प्रकार हमारे घर में और दूसरे खेत पर अग्निहोत्र शुरू हुआ और उसका अच्छा परिणाम भी दीखने लगा।

अग्निहोत्र पद्धति से पहले पहल हमने रबी सीजन के आलू की फसल ली। उसमें अग्निहोत्र भस्म का भरपूर उपयोग खाद के रूप में किया। गोबर का खाद भी पर्याप्त दिया गया। पड़ोस के खेत में दूसरे व्यक्ति ने रासायनिक खाद का उपयोग करके आलू बोया।

अपनी अग्निहोत्र कृषि पद्धति में पौधा ज्यादा ऊंचा नहीं होता, पर फल पुष्ट होता है। दूसरी पद्धति में पौधे तीन फुट तक बढ़ते हैं, हरे दीखते हैं पर जमीन में फल छोटा व संख्या भी कम होती है। हमारा भी यह पहला ही प्रयोग था। बड़े से बड़ा आलू 750 ग्राम से 800 ग्राम तक का निकला और छोटे से छोटा 100 ग्राम तक का निकला। हमेशा से दुगुनी फसल थी। इस प्रथम प्रयोग की सफलता से अग्निहोत्र कृषि पद्धति के प्रति विश्वास उत्पन्न हुआ। हवन का तथा भस्म का परिणाम फलों पर अच्छा होता है यह भी अनुभव हुआ। देखने में आलू का आकार व रंग आकर्षक था। खाने में स्वाद भी उत्तम रहा। इस आलू के खाने से वायु (गैस) कम उत्पन्न होती है यह सबका अनुभव है। इस आलू की यह विशेषता है कि काफी समय तक अच्छा बना रहता है। इसमें इल्ली लगना या सड़ने की प्रक्रिया कभी भी नहीं होती। इसी कारण मुझे इस पद्धति का महत्व अच्छी तरह समझ में आ गया।

अगले वर्ष से अन्य फलों, साग–सब्जी पर अग्निहोत्र भस्म का उपयोग शुरू किया। मुझे ही नहीं, और लोगों को भी सारी फसल देखकर आश्चर्य होता। जो भी देखता आश्चर्य प्रकट करता कि इस प्रकार की फसल कैसे हुई? रोगों से इसका बचाव कैसे हुआ? इसके लिए कौन सा खाद वगैरा उपयोग में लाया? आदि हर छोटी बड़ी बात की वे जानकारी प्राप्त करते। इस पद्धति पर उन्हें सहसा विश्वास नहीं होता। नौकरों से, पास–पड़ोस के लोगों से बार–बार पूछते कि अग्निहोत्र और उसके भस्म के कारण ही ऐसी फसल है या कि और कुछ भी उपयोग में लाया गया है? पर एक ही एक उत्तर सुनकर कि सिर्फ हवन और भस्म का ही यह प्रभाव है, उन्हें विश्वास

करना पड़ता। फिर वे अग्निहोत्र कृषि पद्धति जानने को उत्सुक होते। हमारे यहां 22–23 किलो तक का कद्दू पैदा हुआ। इस वर्ष अनेक कद्दू इसी आकार के हुए। **फूलगोभी, टमाटर, गिल्की, लौकी, बैंगन, ककड़ी, हल्दी, प्याज, लहसुन, करेला, सब तरह की साग भाजी, साथ ही हायब्रीड ज्वार, गेहूं, धान, मूंगफली और अन्य अनाज आदि सभी फसलों में वजन व पैदावार की दर में ड्योढ़े से दुगने का फर्क पड़ा। रंग तथा स्वाद में भी फर्क दीखा। इससे मेरा विश्वास और दृढ़ हुआ।**

सीजन के अनुसार अनाज की फसल लेकर फिर उसी भूमि में गर्मी की सब्जी बोई जाती है। यों लगातार 11 माह तक जमीन पर फसल बनी रहती है। ताप देने के लिए गर्मी में एक माह जमीन को खाली रखते हैं। हमारे पास की जमीन की स्थिति को ध्यान में रखते हुए मैं प्रति एकड़ भूमि में बीस गाड़ी गोबर का खाद देता हूं। साल में एक बार बकरियां बिठाता हूं। इस तरह खाद दिया जाता है। दोनों खेतों पर रविवार, अमावस्या और पूर्णिमा के दिन कुछ घन्टे महामृत्युंजय हवन और नित्य सबेरे शाम अग्निहोत्र किया जाता है। इससे पर्याप्त राख तैयार होने से उसका उपयोग खाद के रूप में हम कर पाते हैं। इन्हीं कारणों से उत्तम और भरपूर फसल प्राप्त होती है।

इस वार्षिक उत्पादन वृद्धि के कारण मेरी आर्थिक परिस्थिति पिछले 2–2½ वर्षों में बहुत अच्छी हो गयी है। पहले मुझे अनाज खरीदना पड़ता था। 3 से 4 माह तक चल सके इतना ही अनाज मेरे खेत में पैदा होता था। आज इतना अनाज होता है कि घर की आवश्यकता की पूर्ति होकर हम अनाज बेच भी सकते हैं। लेख के शुरू में मेरे घर की स्थिति का चित्रण मैंने किया ही था पर आज की

स्थिति प्रत्यक्ष आपके सामने है ही। आर्थिक परिस्थिति सुधरने से पहले का जो ऋण था वह अदा कर चुका हूं। बैल बारदाना लिया। गाड़ी, इलेक्ट्रिक मोटर, आईल एंजिन दो गायें, दो भैसें और 3 एकड़ 14 डेसिमल जमीन भी खरीदी है। पिछले 5 वर्षों में मेरे घर में तीन शादी–ब्याह हुए हैं। आज की तारीख में किसी को कुछ भी देना शेष नहीं है। कोई कुछ मांगने आवे तो उसे खाली हाथ लौटाने की स्थिति नहीं आती। सब बाल बच्चे व हम सुस्थिति में है। मेरी अपनी फल सब्जी की दुकान है। इस कारण अपने खेत में तैयार होने वाले साग–सब्जी की बिक्री इस दुकान में करते हैं जिससे बिक्री का फायदा भी अपनी ही जेब में आता है। एक महत्वपूर्ण लाभ तो यह है कि इस तरह विश्वासपूर्वक अपने खेत का माल लोगों को दे सकते हैं।

जीवन में यह आर्थिक परिस्थिति में फर्क के कारण फालतू दौड़ भाग खत्म हुई। विचारों में दृढ़ता आई। पहले कन्नी काटने वाले लोग अब करीब आने लगे व अपने आप ही इस तरह की खेती की वाह वाह होने लगी है। घर के प्रत्येक सदस्य की परिश्रमी वृत्ति बनी है। आपसी समझ बढ़ने के कारण काम करने में उन्हें आनन्द आता है। हमारा दुख दारिद्र्य अब खत्म हो चुका है। अग्निहोत्र ने दिये शाश्वत सुख के मार्ग पर हमारी प्रगति हो रही है। इससे घर में सुख, अनुशासन, प्रेममय वातावरण बना रहता है।

अग्निहोत्र से ज्वार की भरपूर फसल

– *प्रभाकर भराडकर*

एक सुप्रसिद्ध खाद व कीटनाशक दवाई बनाने वाली कम्पनी में मैं पिछले 20 वर्षों से बिक्री अधिकारी के रूप में कार्य कर रहा हूं। रासायनिक खाद व दवाइयों के घातक परिणामों से मैं अच्छी तरह अवगत था ही। 1979 में सोलापूर (महाराष्ट्र) जिले के मेरे गांव हत्तूर से ग्यारह किलोमीटर दूर स्थित मेरे डेढ़ एकड़ के खेत में मैंने "मालदांडी" जाति की ज्वार पर अग्निहोत्र कृषि पद्धति का प्रयोग किया। इस प्रयोगवाले प्लाट से 500 फुट दूर एक तुलनात्मक प्लॉट (कंट्रोल) रखा गया जिसमें प्रचलित कृषि पद्धति अपनाई गई। प्रयोग की सभी बातें नोट की गई तथा उनके फोटो भी लिए गये। दोनों प्लाटों की भूमि एक सी थी और एक ही दिन दोनों प्लाटों में ज्वार की बोनी की गई।

विवरण

1. 16 सितम्बर 1979 के दिन ज्वार बोई गई। बोने के पहले दो घण्टे बीज को गोमूत्र में रखा गया। फिर गोबर में लपेट कर सूर्यप्रकाश में सुखाकर बोनी की गई।
2. बोनी होने पर बीज पर अग्निहोत्र भस्म डालकर ढँक दिया गया।
3. खेत के मध्य में नित्य अग्निहोत्र किया गया।

4. हर अमावस–पूनम के दिन 10 से 12 घंटे महामृत्युंजय मंत्र से यज्ञ किया गया। गाय का घी 100 ग्राम प्रति घंटे के हिसाब से आहुतियों में प्रयोग किया गया।

5. इस हवन के समय छनी हुई अग्निहोत्र भस्म का फसल पर छिड़काव (डस्टिंग) किया गया।

6. फसल के समय में एक बार निन्दाई–गुडाई की गई और फूल आने के समय एक बार सिंचाई की गई।

7. खेत में रासायनिक खाद का कतई उपयोग नहीं किया गया।

8. हर पंद्रहवे दिन दोनों प्लाटों में फसल की स्थिति आदि के बारे में नोट्स लिए गए।

महत्वपूर्ण नोट्स

(अ) 26–11 व 27–11 को इस क्षेत्र में बहुत पानी बरसा। इस पानी से आस–पास के खेतों में ज्वार की फसल को बहुत नुकसान हुआ। ज्वार के पौधे पीले पड़ गये। उनकी बढ़वार प्रभावित हुई और इस कारण दाना बारीक हो गया।

(ब) अग्निहोत्र वाले प्लाट में वर्षा के पानी का कोई बुरा प्रभाव नहीं दिखा। बल्कि पानी के बाद फसल और सतेज दीखने लगी।

(स) अग्निहोत्र प्रयोगवाले खेत की ज्वार की फसल आखिर तक गहरी हरी बनी रही।

(द) अग्निहोत्र प्लाट वाली ज्वार कटनी के लिए दूसरी ज्वार की तुलना में 15 दिन पहले तैयार हुई।

(य) अग्निहोत्र प्लाट तथा कन्ट्रोल प्लाट की ज्वार के भुट्टे निकाल कर उनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिसके परिणाम इस प्रकार है :–

विवरण	अग्निहोत्र प्रयोग	रासायनिक खाद का प्रयोग
1. ज्वार के भुट्टे का वजन	117 ग्राम	58 ग्राम
2. एक भुट्टे में दाने	3381	2282
3. एक एकड़ में तैयार	11 क्विंटल	7 क्विंटल

सन् 1979 के बाद से खेत में किसी भी रासायनिक खाद व कीटनाशक औषधि का प्रयोग नहीं किया गया है। सब्जी में मुख्यतः बैंगन, करेले, गिलकी आदि की फसल लेते हैं। सबके बारे में उत्साहवर्धक अनुभव है। आज हम निश्चित रूप से सिद्ध कर सकते हैं कि रासायनिक खादों व कीटनाशक दवाइयों का प्रयोग न करते हुए अपने खेत में भरपूर पैदावार ली जा सकती है अग्निहोत्र कृषि पद्धति को अपनाकर।

केले पर अग्निहोत्र भस्म का प्रयोग

– रंछोर प्रसाद मिश्र, ललितपुर (उ.प्र.)

मैंने 7 फरवरी 1979 बुधवार, एकादशी के दिन केले के दो पौधे अपने घर के आंगन में रोपे। उसी समय से अग्निहोत्र भस्म भी उन पौधों की जड़ों में डालता रहा, समय–समय पर पानी भी देता रहा। धीरे–धीरे वह पौधे बढ़ते गये तथा उन्हीं पौधों के बगल से आठ कल्ले फूटकर बड़े केलों के पौधे बन गये। प्रतिदिन के अग्निहोत्र की भस्म जब सात–आठ दिन में अधिक हो जाती तो उन्हीं पौधो में डालता रहता। नौ माह बाद उसमें घार (फलों का बड़ा गुच्छा) निकला। उसमें 500 केले लगे थे, बड़ा लम्बा गुच्छा था। कुछ छोटे आकार के केले झडकर गिर गये थे, सभी केले सुडौल और चमकीले थे। श्री भाई सुरेन्द्र बाबू ने कहा था कि भैया यह केले तो फोटो लेकर केन्द्र में ले जाने योग्य हैं, किन्तु साधन उपलब्ध न होने से विवश था।

वे केले कुछ दिनों तक बढ़ते रहे जब उनकी बाढ़ रूक गई और एक–दो केले ऊपर से पक गये तब दस नवम्बर को घार तोड़कर पकने रख दी गई। दस दिन बाद केले निकाले तो सभी केले पके पीले रंग के निकले। खाने में तो ऐसे मीठे लगे कि भुसावली केलों को भी मात कर दिया। बड़े ही स्वादिष्ट केले थे। पूरे मुहल्लेवालों को इन केलों को बांटा और उन्हें बताया कि यह केवल अग्निहोत्र भस्म का प्रभाव है, जो केले ऐसे स्वादिष्ट और मीठे हैं। दूसरे पौधे में भी गुच्छा निकला है और उसी मात्रा में बढ रहा है।

ऊपरी तौर पर प्रत्यक्ष देखा गया है कि बिना भस्म डाले केले के पौधे छोटे ठिगने, रूखापन लिए हुए एवं बिना रौनक के लगते हैं। जबकि अग्निहोत्र के भस्मि के प्रयोग किये हुए पौधे लहलहाते, चमकीले, हरे–भरे, बड़े आकार के ऊंचे और रौनकदार दिखाई देते हैं।

अग्निहोत्र भस्मि जब उद्भिज्–जगत में ऐसा प्रभाव डाल रहा है, तब बुद्धियुक्त मानव जगत् में इसका प्रभाव पड़े बिना न रहेगा। अतएव प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि इस दैनिक यज्ञ (अग्निहोत्र) का आचरण कर अपना मन पवित्र करें और उसी की भस्मि का सदुपयोग कर साग–सब्जियों में एवं पेड़–पौधों में डालकर राष्ट्र की हरित–क्रांति योजना को सफल बनाकर अपने को लाभान्वित करें। यह अनुभूत प्रयोग है, परीक्षण करें।

नारियल पर अग्निहोत्र का प्रभाव

– निवृत्ति ना. ताम्बडे, नासिक

मैंने नासिक में अपने बंगले के चारों ओर जो थोड़ी सी जमीन है उसी में फल सब्जी आदि लगाई है। यहां हम रहने आये इसे अभी कुल दस माह हुए हैं। नित्य अग्निहोत्र होने से बंगले का सारा वातावरण शुद्ध तो रहता ही है। अग्निहोत्र भस्म कपड़े से छानकर इकट्ठा कर रखा था। लगाई हुई सब्जियों व फलदार पेड़ों को हर हफ्ते कपड़े से छना भस्म कुछ तो जड़ के पास और कुछ पत्तों पर डाला गया। परिणामतः दस महीने के अमरूद के पेड़ को जिसे गमले से निकालकर जमीन में लगाने व भस्म की नियमित खुराक देने से छः महीने बाद ही कुछ फल आने लगे और आज करीब 50–75 फल पेड़ की शोभा बने हुए हैं।

सब्जियों के स्वाद में भी उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ। बैंगन के पौधों में से कुछ को अग्निहोत्र भस्म का डोज़ दिया था। इन पौधों में ऐसे फल फले कि उन्हें हर दूसरे दिन 500 ग्राम के लगभग बैंगन आते हैं। पिछले डेढ़ माह से यही क्रम बना हुआ है। इनका स्वाद भी बड़ा मधुर है।

इन प्रयोगों से उत्साहित होकर चार महीने पहले नारियल के पेड़ पर प्रयोग किया तो वह भी यशस्वी हुआ। नारियल का पौधा जब लगाया जाता है तो शुरू में उसकी बढ़ने की गति बहुत ही मन्द होती है। एक साल तक तो करीब–करीब नहीं के बराबर ही होती है। पूरे

वर्ष में सिर्फ 3–4 नये पत्ते आते हैं। वैसे भी नारियल के लिए उपयुक्त जलवायु नासिक में नहीं है। मैंने पांच पौधे जो सितम्बर में लगाए थे शुरू में उन्हें एक बार आधा किलो नमक प्रति पौधा दिया फिर हर हफ्ते–पखवारे 100 से 150 ग्राम अग्निहोत्र भस्म दिया। हर दूसरे दिन पानी भी दिया। चार माह में प्रत्येक पौधे को अच्छी बढवार हुई, सभी पर तीन–तीन नये पत्ते दिखे। नारियल के उसी जाति व उम्र के तीन पौधे पडोस के प्लाट वालों ने भी मेरे साथ ही लगाए थे। उन्होंने नमक और भैंस के गोबर का खाद उन पौधों में डाला था। तीन में से एक पौधा दो महीने बाद मर गया। शेष दो में जनवरी तक यानी चार महीने में सिर्फ 1–1 नया पत्ता निकला है।

इन प्रयोगों से निश्चित ही यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अग्निहोत्र यज्ञ से व कहे गये मंत्रों के सामर्थ्य से आसपास का वातावरण शुद्ध होता है और इसका अत्यन्त अनुकूल परिणाम उस क्षेत्र के वनस्पति व प्राणीमात्र पर होता है।

मेरी हार्दिक शुभेच्छा है कि पृथ्वी पर फैला प्रदूषण दूर करने करने के लिए घर–घर अग्निहोत्र हो, कृषक भाई बड़े पैमाने पर ये प्रयोग करें तो पृथ्वी पुनः हरी–भरी हो सकती है, हमने अब तक जो खोया है उसे पुनः पाया जा सकता है।

अग्निहोत्र कृषि पद्धति अद्भुत है!

सोयाबीन

मैंने 1990 से अग्निहोत्र आचरण शुरू किया था। बाद में माधवाश्रम से "अग्निहोत्र" नामक पुस्तक मिली, जिसमें एक अध्याय "अग्निहोत्र से कृषि" नामक पढ़ा। मेरी भी इच्छा अग्निहोत्र से कृषि करने की हुई और संचालिका जी माधवाश्रम से मैंने अग्निहोत्र से कृषि करने की पद्धति जानी। 1992 से मैंने अग्निहोत्र से कृषि शुरू की। तब हम पांच भाईयों की साझे की कृषि भूमि थी। हम सब मिलकर कृषि करते थे। खरीफ की फसल सोयाबीन से मैंने अग्निहोत्र कृषि पद्धति अपनाई। भाइयों ने आपत्ति की कि बिना जीवाणु कल्चर के, रासायनिक खाद के खेती करने से नुकसान ही होगा। किन्तु मेरा निश्चय अटल था। पहली फसल में अग्निहोत्र कृषि पद्धति अपनाने से जब फसल कम हुई तो यह विरोध और भी बढ़ गया। पर मैंने तो तय किया था चाहे कुछ भी न ऊगे मैं भूमि में रासायनिक खाद तो नहीं डालूंगा। नतीजा यह हुआ कि जमीन का बँटवारा हो गया और मेरे हिस्से में केवल पांच एकड़ जमीन आई। 1993 से मैंने स्वतंत्र रूप से अग्निहोत्र कृषि शुरू की।

सोयाबीन का पिछले साल का एक क्विंटल बीज मैंने बीस किलो अग्निहोत्र भस्म में मिलाकर सुरक्षित रखा था। उसे निकालकर हवा में भस्म को उड़ा दिया। बोने से पहले दो लीटर गोमूत्र से इस एक क्विंटल बीज को गीला कर लिया। उसमें ताजा अग्निहोत्र भस्म

मिलाकर तीन घंटे छाया में सुखाकर लगभग दो ← ढाई एकड़ में बो दिया। बोने से पहले व्याहृति होम किया था। इस एक क्विंटल बीज से मुझे बाईस क्विंटल सोयाबीन प्राप्त हुआ। पिछले सात साल से मैं इसी तरह सोयाबीन की फसल ले रहा हूं।

बीज बोने, फसल काटने, खलिहान में थ्रेशर से बीज निकालने और फसल को तौलने से पहले मैं हमेशा व्याहृति होम करता हूं। सप्तश्लोकी, पंचशील प्रतिज्ञा और त्रिसत्य शरणागति का उच्चारण करता हूं। फसल बोने के बाद और काटने के बीच सिर्फ दो बार निन्दाई–गुड़ाई करता हूं। पहली बार बुवाई के बीस–इक्कीस दिन बाद और दूसरी बार इसके एक महीने बाद।

सोयाबीन के अलावा चना, ज्वार और मक्का की फसल भी लेता हूं। आवश्यकतानुसार पानी देता हूं। मेरे मुकाबले मेरे बगल के खेतों में साथी किसानों ने भी प्रचलित पद्धति से सोयाबीन बोई थी। एक क्विंटल बीज से किसी को 14, किसी को 15 और किसी को अधिकतम 18 क्विंटल सोयाबीन ही मिली। सोयाबीन मुझे उनसे ज्यादा तो मिली ही जीवाणु कल्चर और रासायनिक खाद का जो खर्चा (लगभग 500 रु.) पहले होता था उसकी भी बचत हुई।

अब ढंग से अग्निहोत्र कृषि कर सकूं इसलिए मैंने गांव का घर छोड़कर अपने खेत में ही घर बना लिया ताकि नित्य अग्निहोत्र करने में कोई कठिनाई न हो। अग्निहोत्र के अलावा और व्याहृति होम के अलावा हर अमावस–पूनम को मैंने खेत में महामृत्युंजय मंत्र से खुद ही यज्ञ भी करता हूं।

चना मसूर

चने और मसूर का बीज भी धूप में अच्छी तरह सुखाकर अग्निहोत्र भस्म मिलाकर भंडारित करता हूं। बोने से पहले सालभर पुरानी भस्म उड़ा देता हूं, गोमूत्र में भिगोकर नई भस्म मिलाकर बो देता हूं। हां, इससे पहले 2 या 3 बार आवश्यकतानुसार खेत की जुताई या बखर कर लेता हूं। चना मैंने एक क्विंटल बोया जो 15 क्विंटल मिला, जबकि रासायनिक खाद से केवल 13 से 14 क्विंटल के बीच उपज होती थी। लगभग 300 रु. की रासायनिक खाद लगती थी, उसकी भी बचत हुई।

एक साल चना मसूर में उगरा नामक कीड़ा लगा जिससे गांव के सभी किसानों की फसल को भारी नुकसान पहुंचा, सिर्फ मेरी ही फसल इस कीड़े से मुक्त थी। जिले के कृषि अधिकारी भी मेरी फसल देखकर अचरज कर रहे थे। उगरा यह एक कीड़ा होता है जो पौधे की जड़ को काट लेता है। उस साल यह पूरे गांव की फसल पर लगा था। कोई भी खेत तहसील में ऐसा न था जहां इसने नुकसान न किया हो। पहले सबके साथ मेरे खेत में भी यह कीड़ा लगता था तब ब्लाक वाले एक दवा देते थे मगर वह भी कामयाब नहीं होती थी। केवल अग्निहोत्र कृषि का ही परिणाम है कि इस बार मुझे किसी दवा की जरूरत ही नहीं हुई।

अग्निहोत्र कृषि अपनाने के बाद से मेरे खेत में केंचुओं की संख्या में भी भारी वृद्धि हुई है। इससे भी मेरे खेत की मिट्टी का उपजाऊपन बढ़ा है। पहले रासायनिक खादों और दवाओं के कारण केचुंए मर जाते थे। पिछले पांच–सात वर्षों में हर बार फसल में चाहे 5–10 किलो की ही क्यों न हो पर वृद्धि होती है। कोई बीमारी तो

लगती ही नहीं। आस–पास के खेतों में गेहूं चना पर कीड़ा–इल्ली का प्रकोप शुरू होता है तभी मैं तत्काल अग्निहोत्र भस्म से कीड़ा इल्ली भगाऊ दवा तैयार कर उसे फसल पर छिड़क देता हूं और मेरी फसल इनके प्रकोप से बची रहती है। यदि मावठ के बादल होते हैं तो चने में इल्ली दिखाई देती है। तब उपाय यह है कि 200 लीटरवाले ड्रम में पानी भर कर उसमें 10 किलो के करीब अग्निहोत्र + यज्ञ भस्म डालकर घोल देता हू। 24 घंटे बाद कपड़े से छानकर पम्प से स्प्रे कर देता हूं उस पानी को। यही मेरी इल्ली भगाऊ दवा है।

अपने अनुभवों से मुझे यह लगा कि अग्निहोत्र कृषि पद्धति की जानकारी प्रदेश के गांव–गांव तक पहुंचनी चाहिये। मैं कृषि मंत्री से जाकर मिला। उन्हें अपने अनुभव बताये। उनसे आग्रह किया कि वे इस कृषि पद्धति को जन–जन तक पहुंचाने में मेरी मदद करें। उन्होंने जिलाध्यक्ष के नाम चिट्ठी लिख दी। मैं कलेक्टर से मिला। कलेक्टर साहब को पहले तो विश्वास ही नहीं हुआ कि बगैर रासायनिक खादों और कीटनाशक प्रयोग किए अनाज उत्पादन में वृद्धि हो सकती है। उन्होंने उपसंचालक कृषि विभाग, म. प्र. श्री जैन के नाम चिट्ठी लिखी कि यह किसान जो कुछ कह रहा है उसकी सरकारी स्तर पर जांच कर रिपोर्ट दें। श्री जैन साहब तीन बार अपने सरकारी दौरे पर मेरे खेत पर आये, बोनी के वक्त, कटनी के समय और तुलाई के समय। उनके साथ बेरसिया ब्लाक के 4–5 अधिकारी तथा ग्राम सेवक भी रहते थे। उन्होंने अपने तरीके से जांच की। उन्होंने कटनी के वक्त जांच इस तरह की कि सोयाबीन के मेरे खेत से एक पौधा उखाड़ा और एक पौधा पड़ोस के उस किसान के

खेत से उखाड़ा जिसने जीवाणु कल्चर व रासायनिक खाद देकर सोयाबीन बोया था। सबने अपनी आंखों से देखा कि मेरे अग्निहोत्र कृषि के खेत से जो पौधा उन्होंने उखाड़ा था उसमें फलियां ज्यादा थीं और दाने भी मोटे और चमकीले थे, बगल के खेत की तुलना में। वे सब अग्निहोत्र कृषि से प्रभावित हुए। उनके साथ कृषि विभाग का फोटोग्राफर भी आया था जिसने फसल के फोटो लिए। श्री जैन साहब ने बाद में कृषि विभाग के समाचार पत्र साप्ताहिक ''कृषक जगत'' में मेरा परिचय देते हुए ''अग्निहोत्र कृषि'' पर एक लेख भी लिखा। बस, इसके बाद कुछ नहीं हुआ। सारा मामला ठण्डे बस्ते में चला गया।

मेरा सभी किसान भाइयों से अनुरोध है कि वे प्रचलित कृषि पद्धति को तत्काल बन्द कर दे, वह मनुष्य, पशु–पक्षियों और पेड़–पौधों के लिए जानलेवा है। प्रचलित कृषि पद्धति हम किसानों को गरीब बनाती है और धरती माता का खून चूसती है। मेरा सबसे अनुरोध है कि वे अग्निहोत्र कृषि पद्धति अपनाएं और ज्यादा अन्न उपजाएं, भूमि को उपजाऊ बनाएं साथ ही तन, मन की तंदुरूस्ती पाएं। अब मैं गांव–गांव घूमकर इस कल्याणकारी कृषि पद्धति की जानकारी किसान भाइयों को दे रहा हूं। पिछले एक साल में मैंने 27 गांवों में अग्निहोत्र प्रदर्शनी लगाकर अग्निहोत्र की जानकारी हजारों किसान भाइयों तक पहुंचाई है। मुझे खुशी है कि इस काम में मेरे भाइयों के अलावा नौजवान युवक बड़ी संख्या में मेरे साथ जाते हैं, वे शिक्षित भी हैं और अग्निहोत्र तथा अग्निहोत्र कृषि का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। मेरी अनुपस्थिति में मेरी धर्मपत्नी और बच्चे अग्निहोत्र तथा यज्ञ करते हैं। किसान भाई चाहें तो मैं उन्हें अग्निहोत्र कृषि पद्धति का प्रशिक्षण देने के लिए भी तैयार हूं।

अग्निहोत्र करने का एक बड़ा फायदा यह भी है कि मेरे परिवार में ऐसी कोई बीमारी पिछले पांच वर्षों में नहीं हुई है, जिसके लिए मुझे डाक्टर के पास जाना पड़े। साधारण बुखार आदि इसी से ठीक हो जाता है। मलेरिया तक ठीक हो जाता है। पिछले साल मेरे छोटे बच्चे को मलेरिया होकर वह बिगड़ गया था। तब डाक्टर के पास खून की जांच करवाने ले गया था, लेकिन दवा मैंने अपनी ही दी। उसे दिन में तीन बार दूध पिलाया। दूध गरम करते समय एक चम्मच अग्निहोत्र भस्म डाली। बस। आठ–दस दिन में बच्चा खेलने–कूदने लगा। अग्निहोत्र से मानसिक प्रसन्नता भी रहती है।

मेरा अनुभव है कि गांववाले तीन बातों में अपना जीवन बरबाद करते हैं। एक तो लड़ाई–झगड़े, दूसरे बीमारियां और तीसरे चिन्ता। अग्निहोत्र आचरण से इन तीनों से छुटकारा मिल जाता है। यह फायदा भी मुझे इतना हुआ कि मेरा पूरा गांव, मेरा पूरा परिवार दंग रह गये। पहले पूरे गांव में मुझ जैसा झगडालू कोई नहीं था, वही मैं पिछले पांच साल से झगड़ों से दूर रहता हूं। पहले मेरे दुश्मन ही दुश्मन थे। हर समय मुझे जान का खतरा बना रहता था। आज सब मेरे मित्र हैं। मेरी आर्थिक स्थिति पहले से अच्छी है। मनःशांति और शारीरिक स्वास्थ्य का लाभ पूरे परिवार को मिल रहा है। यह सब केवल अग्निहोत्र की ही देन है।

यदि कोई किसान भाई खेत पर रहकर अग्निहोत्र न कर सके मेरी तरह तो अपने घर पर ही अग्निहोत्र करे और उसकी भस्मी से बीजोपचार करके बोनी करे। आवश्यकतानुसार सूखा ही या पानी में मिलाकर अग्निहोत्र भस्म का फसल पर छिड़काव करे, तो भी उन्हें फायदा होगा। इस बात का ध्यान रखें कि अग्निहोत्र कृषि पद्धति

अपनाने पर हो सकता है कि पहले साल उन्हें कोई खास लाभ न हो। पर वे इससे घबराएं नहीं। अग्निहोत्र की सारी शक्ति रासायनिक खादों और दवाओं का असर जो भूमि पर हो चुका है उसे दूर करने में लग जायेगी। अगले साल से तो फिर फायदा ही फायदा होगा। जो हर साल बढ़ता जाएगा। भूमि को आदत पड़ जाती है रासायनिक खाद की इसीलिए ऐसा होता है कि पहले साल अग्निहोत्र कृषि पद्धति से विशेष फायदा न हो। लेकिन यदि आपने पहले कभी रासायनिक खाद का प्रयोग नहीं किया है तो फिर पहले साल से ही अग्निहोत्र कृषि पद्धति का चमत्कार आप देख सकेंगे।

मेरा नाम पता इस प्रकार है :

श्री प्रतापसिंह मैना

ग्राम – लालूखेड़ी, तहसील बैरसिया, जिला भोपाल (म.प्र.)

मेरा खेत व घर बेरसिया से शमशाबाद जाने वाले पक्के रोड पर बेरसिया से केवल पांच किलोमीटर दूर सड़क से लगा हुआ है। मेरे खेत से एक किलोमीटर आगे मेरा गांव लालूखेड़ी है जहां अब मैं नहीं रहता। मेरे खेत की पहचान यह है मैंने सड़क किनारे पानी की एक टंकी बनवाई है (प्याऊ) जिस पर अग्निहोत्र की जानकारी वाले वाक्य लिखे हुए हैं। बेरसिया–शमशाबाद जाने वाली बसें अनुरोध करने पर यहां रूकती हैं। चूंकि किसानी के काम से जो भी समय बचता है वह मैं अग्निहोत्र प्रचार के लिए गांव–गांव जाकर लगाता हूं इसलिए जो किसान भाई ये कृषि देखना चाहें वे एक माह पहले उपरोक्त पते पर चिट्ठी भेज कर अपने आने की सूचना दे दें ताकि मैं घर पर उपलब्ध रह सकूं।

(टेपित इन्टरव्यू का शब्दांकन)

बंजर भूमि उर्वरा बनी

– श्रीमती होजेस, प्रोग्राम डायरेक्टर
होमा थेरेपी एसोसिएशन ऑफ नार्थ अमेरिका
अलबामा, यू. एस. ए.

अमेरिका के अलबामा प्रान्त के ओपेलिका शहर के "उत्तरी अमेरिका अग्निहोत्र कृषि संगठन" ने 1979 में इस कृषि पद्धति के सूक्ष्म निरीक्षण का कार्य प्रारंभ किया था। इस संगठन की प्रोग्राम डायरेक्टर श्रीमती जेरी होजेस लिखती हैं –

संगठन ने अग्निहोत्र कृषि पर रिसर्च करने के लिए 17 एकड़ का फार्म प्राप्त किया। पिछले सौ वर्षों से अलबामा तथा पड़ोसी राज्यों में कपास की मुख्य फसल होती आ रही थी। बुजुर्ग कृषकों और कृषि विशेषज्ञों के अनुसार परंपरागत कृषि पद्धतियों के कारण अधिकांश भूमि की उपजाऊ ऊपरी परत निर्जीव हो गई थी। प्रचलित कृषि पद्धति के अनुसार जमीन को साफ करके मौसम के अनुसार कपास के पौधे रोपे जाते थे। भूमि की ऊर्वरता को बनाये रखने के लिए आवश्यक खाद नहीं दी जाती थी। ठण्ड के दिनों में मिट्टी खुली पड़ी रहती थी जिससे हवा और पानी के कारण इस उपजाऊ परत का क्षरण होता रहता था। जब भूमि में मौजूद सभी उर्वरकों का दोहन फसल द्वारा कर लिया जाता था। तब उस भूमि को छोड़कर नई जमीन तैयार की जाती थी। पुरानी निर्जीव भूमि को कुदरत के भरोसे छोड़ दिया था। जब तक प्रकृति उस जमीन पर घास पात उगा कर सुरक्षा आवरण नहीं बना लेती थी, तब तक उसे खेती के

काम नहीं लिया जाता था और उपजाऊ मिट्टी का क्षरण लगातार होता रहता था। ऐसी जमीन का उपयोग पशुओं की चारागाह या फलदार वृक्ष लगाने के लिए ही हो पाता था।

हमें प्राप्त इस 17 एकड़ जमीन की ऊपरी उपजाऊ परत भी, जिसमें फसल के लिए आवश्यक जीव जीवाणु होते हैं, पूर्णतः नष्ट हो चुकी थी। जैसे कि अधिकांश कपास के खेतों में होता है, इस जमीन पर एक भी पेड़ नहीं था। **जो सेन्द्रीय खेती (आर्गेनिक फार्मिंग) के जानकार हैं वे भी कहते थे कि जो कोई इस जमीन पर सेन्द्रीय कृषि करेगा उसे पहले अपने दिमाग की जांच करवा लेनी चाहिए।** वास्तविकता यह है कि पहले खेत की इस उपजाऊ परत का पुनर्निर्माण होना चाहिये। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार इस परत के पुनर्निर्माण के लिए सौ वर्षों का समय चाहिये ही चाहिये। मगर हमारे प्रयोग ने यह साबित कर दिया कि अग्निहोत्र कृषि पद्धति अपनाई जाए तो यह अवधि सिमटकर सिर्फ साल–दो साल में ही मिट्टी का पुनर्निर्माण हो जाता है।

सचमुच, अग्निहोत्र कृषि पद्धति को परखने के लिए ऐसी बंजर भूमि से बेहतर कसौटी और क्या हो सकती है? इस भूमि का इतिहास अमेरिका तथा अन्य सभी देशों की कृषि भूमि का प्रतिनिधित्व करता था, जहां पर रासायनिक कृषि पद्धति एवं अन्य गलत कृषि तकनीकों के कारण जमीन की यह उपजाऊ परत व्यापक रूप से नष्ट हो चुकी है।

हमने इस जमीन में से अपने प्रयोगों के लिए लगभग 2400 वर्गफिट का एक टुकड़ा चुना। सबसे पहले एक छोटे ट्रेक्टर से जमीन की ऊपरी सतह की मिट्टी की परत पलट दी गई। जमीन

बहुत ही सख्त थी, 35 हार्सपावर का ट्रैक्टर भी 3-4 इंच की गहराई तक ही मिट्टी पलट सका। फिर हमने बायोडाइनेमिक तथा फ्रेन्च इन्टेन्सिव पद्धति से उभरे हुए बेड तैयार किए। बेलछे से हाथों द्वारा ही छह से आठ इन्च गहराई तक मिट्टी पलटी गई। घोड़े की लीद की सड़ी हुई खाद की इस मिट्टी पर तीन इंच की परत बिछाई गई। आठ इंच गहरी मिट्टी में फावडे से इस खाद को मिट्टी में अच्छी तरह मिला दिया गया।

अब मिट्टी का परीक्षण करवाया जिससे पता चला कि मिट्टी की पी एच वेल्यू 5.5 पाया गया। एबम (Aubum) युनिवर्सिटी में मिट्टी परीक्षण करने वाले वैज्ञानिकों ने सलाह दी निम्नलिखित तत्वों को मिलाने की –

1. अम्लीयता बढ़ाने के लिए प्रति एकड़ दो टन चूना पत्थर मिलाया जाए।
2. नत्रजन की कमी के लिए प्रति एकड़ एक सौ बीस पाउन्ड नत्रजन।
3. इसी तरह प्रति एकड़ एक सौ अस्सी पाउन्ड नत्रजन तथा इतनी ही मात्रा में पोटाश।
4. एक पाउन्ड बोरान (Boron) प्रति एकड़। ओबाम यूनिवर्सिटी के इस सुझाव के मुताबिक आनुपातिक मात्रा में प्रति बेड निम्नलिखित तत्व मिलाए। (1) चूना पत्थर (2) कपास की खली (3) सेन्द्रिय स्फुर (4) बोरेक्स तथा (5) अग्निहोत्र भस्म। फावडे द्वारा दो इंच गहरी मिट्टी में उपरोक्त तत्व मिलाए गए। चंद्र की कलाओं के अनुसार बीज बोये गये। बीज

जानबूझकर पास–पास बोये गये ताकि मिट्टी पुनः सख्त होकर पौधों की वृद्धि में बाधक न बने।

अक्टोबर 1980 में ही 12 X 16 फीट की एक कुटिया नित्य अग्निहोत्र व नैमित्तिक यज्ञ करने के लिए हमने बनवा ली थी। यह कुटिया खेत के केन्द्र से हटकर थोड़ा बाँयी ओर थी। यहां प्रतिदिन सायम् – प्रातः अग्निहोत्र तथा चार घंटे महामृत्युंजय मंत्र से यज्ञ किया गया। समय–समय पर व्याहृति होम भी हुआ। अग्निहोत्र कृषि पद्धति के अनुसार सारे कृषि कार्य किए गए।

यह रिपोर्ट लिखने तक केवल एक ही फसल आई है। सेम की। यहां हम अपने प्रयोग का विवरण दे रहे हैं –

(1) 1989–90 का पूरे अमेरिका का औसत उत्पादन

(रासायनिक कृषि का) प्रति 100 वर्गफुट 8.20 पाउन्ड

अग्निहोत्र फार्म का प्रति 100 वर्गफुट 43.75 पाउन्ड

यानी औसत से ज्यादा पैदावार + 35.55 पाउन्ड रही जो प्रतिशत के हिसाब से + 433.5% रही।

(2) 1989–90 का पूरे अमेरिका की सेन्द्रीय कषि (Organic farming) की औसत पैदावार प्रति 100 वर्गफुट 30.00 पाउन्ड रही।

वहीं अग्निहोत्र कृषि फार्म की पैदावार प्रति 100 वर्गफुट 43. 75 पाउन्ड हुई।

सेन्द्रीय कृषि पद्धति से पैदावार का अन्तर वजन में 13.75 पाउन्ड तथा प्रतिशत में 45.5% अधिक रहा।

इस प्रकार रासायनिक कृषि पद्धति से होने वाली अमेरिका की सेम की कुल औसत पैदावार से हमारी अग्निहोत्र कृषि की उपज 961% अधिक थी तथा सेन्द्रीय कृषि पद्धति की औसत पैदावार से हम 38.34% आगे थे। बंजर और अनुपजाऊ जमीन पर यह चमत्कार केवल अग्निहोत्र कृषि पद्धति से ही संभव है ।

गरीब तथा छोटी जोत वाले किसान भाइयों को चाहिए कि यदि वे कृषि एवं पशुपालन के माध्यम से समृद्ध–सम्पन्न होना चाहते हैं तो अविलम्ब इस कृषि पद्धति को अपनाएं एवं प्रदूषण मुक्त तुष्टि–पुष्टिदायक अन्न उत्पादित करके जन सामान्य को उपलब्ध कराएं। कम पानी की तथा थोड़ी सी भूमि से अधिकाधिक अन्नोत्पादन तो करें ही साथ ही भूमि की उर्वराशक्ति भी बनाएं – बढ़ाएं। प्रदूषणरहित शुद्ध अन्न ही शुद्ध बुद्धि का व उत्तम स्वास्थ्य का दाता है। जिसका आज अत्यंत अभाव है। अग्निहोत्र कृषि पद्धति यह काम करती है। तथाकथित "जादुई" रासायनिक खादों व दवाओं के दुष्परिणाम सामने आ चुके हैं। इनकी वजह से किसान गरीब होता जा रहा है, अगर कोई अमीर हुआ भी है तो जमीन की उर्वरता की कीमत उसे चुकानी पड़ी है। रासायनिक खादों व दवाओं से जमीन बंजर हो जाती है। यह सभी किसान महसूस कर रहे हैं। इधर तेजाबी वर्षा व अन्य प्रदूषकों ने सेन्द्रिय कृषि (Organic farming) कर रहे किसानों को भी हैरान कर दिया है। ऐसी स्थिति में तेजाबी वर्षाजल, दूषित भूमिजल, दूषित वायु तथा सूर्य की पराबैंगनी किरणों के प्रदूषण से फसल की तथा भूमि की रक्षा करने में पूर्ण समर्थ अग्निहोत्र कृषि पद्धति का व्यापक पैमाने पर किसानों में प्रचार–प्रसार होना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षित एवं प्रबुद्ध कृषकों से आग्रह है कि वे स्वंय अग्निहोत्र कृषि पद्धति अपनाएं, उसके चमत्कार देखें–परखें और अन्य किसान भाइयों को इसे अपनाने के लिए प्रेरित करें।

नोनिया ऊसर भूमि उपजाऊ बनी

– डॉ. रामाश्रय मिश्रा कानपुर (उ. प्र.)

सन् 1988 में कानपुर शहर में एक उपनगर अग्निहोत्र नगर की स्थापना के उद्देश्य से जो भूमि क्रय की गई थी, वह कृषि के योग्य तो छोड़िए उस पर भवन निर्माण कार्य भी संभव नहीं प्रतीत हो रहा था। अग्निहोत्र नगर क्षेत्र की लगभग सारी जमीनें ऊसर थीं। जमीनों में नमक की मात्रा इतनी अधिक थी कि मकानों की दीवारें क्षतिग्रस्त (नोना लग जाने के कारण) हो जाने की आशंका प्रबल थीं। भूमि परीक्षण की रिपोर्ट के अनुसार मिट्टी का पी.एच. मान इतना अधिक था जो कृषि अथवा भवन निर्माण कार्य के लिए सर्वथा अनुपयुक्त होता है। भूमि परीक्षण की रिपोर्ट देखने बाद तो अग्निहोत्र नगर में हरियाली देखने की बात दिवास्वप्न सी लग रही थी। परन्तु अग्निहोत्र आचरण के बाद ऊसर भूमि को कृषि योग्य भूमि में परिवर्तित किया जा सकता है, इस आशा के साथ अग्निहोत्र भवन के निर्माण का कार्य वर्ष 1988 में शुरू करवा दिया गया। साथ ही वहां नियमित रूप से अग्निहोत्र भी शुरू कर दिया गया।

अग्निहोत्र भवन परिसर में भरपूर मात्रा में पेड़–पौधे लगाये गए जो शुरू–शुरू में अत्यधिक नमक की वजह से सूखने लगे। छोटे–छोटे पौधों की पत्तियों पर नमक के लक्षण स्पष्ट रूप से देखे जा सकते थे। नियमित अग्निहोत्र आचरण के साथ ही अग्निहोत्र भस्म का छिड़काव पूरे परिसर में किया गया और पौधों की जड़ों में अग्निहोत्र भस्म डाला गया। अग्निहोत्र भस्म को पानी में मिलाकर

पत्तियों पर स्प्रे किया गया। इतना सब करने के बाद भी बहुत थोड़े से पौधों को बचाया जा सका। डेढ़ – दो वर्ष का समय बीत गया तब पुनः भूमि परीक्षण कराया गया। इस बार की रिपोर्ट उत्साहवर्धक थी, क्योंकि नमक की मात्रा आश्चर्यजनक रूप से कम होने लगी थी। दुबारा पेड़–पौधे लगाए गये। पौधों की जडों में अग्निहोत्र भस्म के अतिरिक्त कुछ भी नहीं डाला गया। प्रत्येक 15 दिनों के अन्तराल पर अग्निहोत्र भस्म को पानी में मिला कर छिड़काव भी किया जाता रहा। इस बार कुछ पौधों को छोड़कर बाकी सब पौधे स्वस्थ रहे और उनका सामान्य रूप से विकास हुआ। परन्तु फिर भी कुछ पौधों की पत्तियों पर नमक (Salt) होने के लक्षण स्पष्ट दृष्टिगोचर होते रहे। सन् 1990–91 तक अग्निहोत्र भवन, यज्ञ शाला, कार्यालय आदि का निर्माण कार्य सम्पन्न हो चुका था। इनकी दीवारों पर भी भूमि में नमक अधिक होने के लक्षण देखे जा सकते थे।

वर्ष 1996–97 में पुनः भूमि परीक्षण कराया गया। रिपोर्ट के अनुसर अब सम्पूर्ण परिसर की भूमि सामान्य है। परिसर में सैकड़ों फल–फूल, पेड़–पौधे सामान्य है। यहां तक कि पूरे अग्निहोत्र नगर क्षेत्र की भूमि उपजाऊ हो गई है और अब भवन निर्माण के कार्य से सम्बन्धित नोनिया ऊसर की कोई बाधा नहीं रह गई है।

आज अग्निहोत्र नगर क्षेत्र को देखकर दावे के साथ कहा जा सकता है कि अग्निहोत्र के नियमित आचरण एवं उसके भस्म का प्रयोग करके ऊसर भूमि को भी कृषि एवं भवन निर्माण के योग्य बनाया जा सकता है।

वैज्ञानिक प्रयोग खण्ड

केवल अग्निहोत्र भस्म भी लाभदायक

– रामाश्रय मिश्र, कृषि विशेषज्ञ
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कानपुर (उ.प्र.)

(अग्निहोत्र कृषि शिविर माधवाश्रम में दिनांक 5 अप्रैल, 1982 को दिए व्याख्यान का सारांश)

मैंने अग्निहोत्र का सबसे पहला प्रयोग "राई" यानी सरसों की "वरूणा" नामक जाति पर किया था। यह जाति पूरे देश में काफी प्रचलित है। इस जाति पर मैंने पहले भी कुछ शोध कार्य किया था। इस राई की फसल में एक बीमारी लगती है "आल्टरनेरिया ब्लाइट", इसे कहीं–कहीं झुलसा रोग भी कहते हैं। इस रोग में धब्बे पड़ जाते हैं तनों पर, वे धब्बे फिर पत्तियों पर भी आते हैं और पत्तियों से होते हुए उसकी जो फली है, राई की, उस पर वे आ जाते हैं। फली के दानों को यह रोग बुरी तरह से प्रभावित करता है। किसी–किसी वर्ष यह झुलसा रोग का प्रकोप इतना भयानक होता है कि पूरी की पूरी फसल बरबाद हो जाती है। पिछले दो–तीन वर्षों से कानपुर क्षेत्र में यह बीमारी व्यापक रूप से, बड़े उग्र रूप में फैली हुई थी। इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है हमारे यहां। पहले दवाओं का इस्तेमाल करते थे, और उनसे थोड़ा बहुत कण्ट्रोल हो जाया करता था। लेकिन इधर कई वर्षों से दवाओं का इस बीमारी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। पूर्ण तरीके से इसका परीक्षण कर लिया गया है कि यह बीमारी लाइलाज हो चुकी है।

मैंने जब अग्निहोत्र आचरण शुरू किया तो अग्निहोत्र कृषि के बारे में कुछ हमें जानकारी मिली तो मैंने सोचा कि क्यों न एक प्रयोग करके देखा जाये मैंने 'वरुणा' जाति की राई का 400 ग्राम बीज लेकर के उसमे से आधा बीज मैंने अलग कर दिया। आधे बीज को अग्निहोत्र की राख + गोमूत्र + गाय के सूखे गोबर के घोल में थोड़ी देर के लिए डाल दिया। उसके बाद बीज को निकालकर छाया में सूखने के लिए रख दिया। 24 घंटे तक बीज सूखता रहा। अगले दिन मैंने उसकी बुवाई कराई। बुवाई वैज्ञानिक तरीके से की गई।

विश्वविद्यालय के खेत में सभी प्रकार के प्लाट बनाए गए थे इस प्रयोग के लिए। प्रत्येक प्लाट साढ़े बारह चौरस मीटर का था। 4 ढंग से यह प्रयोग किया गया प्रत्येक ढंग के 6 अलग–अलग प्लाट पूरे खेत में फैले थे। (1) पहले ढंग या तरीके में मैंने राई के बीज को उपरोक्त घोल से शोधित किया था तथा पौधे उगने के बाद उसमें समय–समय पर अग्निहोत्र की राख भी डाली थी। (2) दूसरे तरीके के बीज ऐसे थे जिनमें पौधे उगने पर केवल अग्निहोत्र की राख डाली, उन्हें यानी बीज को शोधित नहीं किया गया। (3) तीसरे तरीके में बीज को शोधित किया गया पर प्लाट में राख नहीं डाली गई। (4) चौथे और अन्तिम तरीके में न तो बीज शोधित किया गया न ही राख डाली गई। इनमें से हरेक तरीके के 6 प्लाट खेत में विभिन्न जगहों पर थे। ऐसा इसलिए किया गया कि कोई यह न कहे कि अमुक प्लाट में मिट्टी की उर्वरा शक्ति अधिक थी या अमुक में पानी अधिक मिला, या अमुक में खाद अधिक पड़ गई, गोबर की खाद।

सभी प्लाटों में अंकुरण हुआ। पौधे आए। जिन प्लाटों पर राख

छिड़कनी थी अग्निहोत्र की उन प्लाटों में लगभग हर 15 वें दिन राख छिड़की गई फसल आने तक। यह राख अधिकतर सिंचाई के आगे या पीछे ही छिड़की गई।

उस वर्ष बीमारी का भीषण प्रकोप हुआ। उस खेत में इस प्रयोग के 32–33 प्लाट्स और थे। ये सारे प्लाट जिनमें रासायनिक खाद का प्रयोग किया गया था यूं समझिये कि बड़ी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुए इस बीमारी से। इन पर दवायें भी बुरी तरह छिड़की गईं, कीटनाशी दवायें। कल्पना करें कि हमारे दो आदमी लगातार दवायें छिड़क रहे थे। खेत के एक सिरे से दवायें छिड़कते हुए अंतिम सिरे तक ये लोग पहुंचते थे कि पुनः छिड़काव करते हुए पहले सिरे की ओर आते थे। इतना सब करने के बावजूद बीमारी कण्ट्रोल नहीं हुई। अब खेत के जिस हिस्से में अग्निहोत्र वाले प्लाट थे उनका बड़ी बारीकी से निरीक्षण किया गया।

मैं तो इस शाखा का व्यक्ति नहीं था, मेरा तो विषय दूसरा था। परन्तु इस विषय के भी एक्सपर्ट्स हुआ करते हैं जो बीमारी को पहचानते हैं, निदान करते हैं और अध्ययन करते हैं। मैंने उन विशेषज्ञों को आमंत्रित किया कि वे आकर हमारे खेत पर देखें। सभी प्लाटों को मैंने कोड लैंग्वेज में नाम दिए थे। किस प्लाट में क्या उपचार (ट्रीटमेन्ट) किया गया है यह मैंने उन विशेषज्ञों को नहीं बताया था। उन्हें मैंने खेत के एक तरफ से बीमारी के प्रकोप का निरीक्षण करने में लगा दिया। तो बीमारी का आब्जर्वेशन जांचने का तरीका होता है 0, 1, 2, 3, 4, और 5। 0 का मतलब होता है कुछ नहीं और 5 का मतलब होता है सर्वाधिक। तो ये रिकार्ड किया गया। नंबर दिए गए। तब पाया गया कि कोई भी ऐसा प्लाट नहीं था

जिसको जीरो नंबर दिया गया हो। अर्थात् कोई भी प्लाट ऐसा नहीं था जिसमें बीमारी न लगी हो। 1 नंबर भी किसी को नहीं मिला, जिसमें बीमारी न्यूनतम लगी हो। लेकिन 2 से लेकर 5 तक नंबर सभी प्लाटों को पड़े। जब मैंने कोड लैंग्वेज तोड़कर देखा तो पाया कि 2 और 3 नंबर जिनको भी मिले थे उनमें या तो राख डाली गई थी या बीज शोधित हुआ था या दोनों ही बातें हुई थीं। एक आध प्लाट ऐसा था जिसको 4 नंबर मिला और ऐसे प्लाटों में शोधित बीज भी बोया गया था, राख भी डाली गई थी। लेकिन वे प्लाट जिनमें ये दोनों काम नहीं किए गए थे, उन सभी को 4 या 5 नंबर मिले। उनमें से एक भी प्लाट ऐसा नहीं था जिसको 2 या 3 नंबर मिले हों। ध्यान रहे हर तरीके का प्लाट 6 जगह बनाया गया था।

जब औसत निकाला गया तो जो हमारा औसत आया वह 30 प्रतिशत था। जिन प्लाटों में बीज शोधन + राख का छिड़काव किया था या इनमें से एक ही उपचार किया था उन सभी में बीमारी लगी। किन्तु वह केवल 30 प्रतिशत ही पाई गई। लेकिन जिन प्लाटों में यह उपचार नहीं हुआ उनमें बीमारी के प्रकोप का प्रतिशत 45% से 50% तक था।

इस आब्जर्वेशन में अन्य बातों का भी ध्यान रखा गया था। जैसे पौधों की ऊंचाई, कितने दिन में फूला, कितने दिन में पका, दानों का क्या वजन था, इत्यादि। एक हजार दाने गिन करके उनका वजन किया गया। इसका भी जब औसत निकाला गया तो अग्निहोत्र भस्म से उपचारित जो पौधे थे उनके 1000 बीज का वजन 4 से 5 ग्राम पाया गया। जबकि जिन प्लाटों में यह उपचार नहीं किया गया था उनमें एक हजार दानों का वजन 2 से 3 ग्राम मात्र निकला। फिर

उपज को तौला गया और उसे किलोग्राम प्रति हैक्टेयर में बदल दिया गया तो हमारे चार तरह के रिजल्ट आये।

तालिका – 1

बीजोत्पादन किलोग्राम प्रति हेक्टेयर में तथा झुलसा रोग (आल्टरनेरिया ब्लाइट) की मात्रा।

उपचार	उत्पादन कि./हे.	बीमारी की मात्रा प्रतिशत में
1. बीज का शोधन तथा अग्निहोत्र भस्म छिड़काव	1595	30
2. बीज का शोधन किन्तु अग्निहोत्र की राख का छिड़काव नहीं	1480	40
3. बीज का शोधन नहीं किन्तु अग्निहोत्र की राख का छिड़काव	1530	40
4. बीज का शोधन नहीं और अग्निहोत्र की राख का छिड़काव भी नहीं किया गया	1208	50

जिन प्लाटों में बीज का शोधन किया गया तथा अग्निहोत्र की राख भी छिड़की गई उनमें 1595 किलो प्रति हैक्टेयर उपज मिली। और जिनमें न तो बीज को राख के घोल से शोधित किया गया और न ही बाद में अग्निहोत्र की राख डाली गई उत्पादन हुआ, केवल 1208 किलो प्रति हैक्टेयर। दोनों का अन्तर 387 किलो रहा। अग्निहोत्र की राख के प्रयोग से एक हैक्टेयर (ढ़ाई एकड़) में 387 किलो अधिक उपज मिली।

इसके बाद इसका खर्च निकाला गया तो अग्निहोत्र की राख का केवल इस्तेमाल करने से 2000 रूपये की अतिरिक्त शुद्ध आय प्रमाणित हुई।

एक बात और ! जिन प्लाटों में राख दी गई थी अग्निहोत्र की तथा बीज शोधन भी किया गया था, उनमें उपजी राई में तेल का प्रतिशत 40 पाया गया और जो कण्ट्रोल प्लाट थे उनकी राई में तेल का प्रतिशत 37% मात्र था। तेल में 3% वृद्धि कोई मामूली बात नहीं होती। यह तथ्य भी एक मायने रखता है।

यह मेरा प्रथम अनुभव था। वास्तव में हमें भी इस प्रकार के परिणाम की कोई, कतई उम्मीद नहीं थी। हमारे एक्सपर्ट्स ने भी इस प्रयोग का काफी मखौल उड़ाया था। फिर भी मैंने इसे किया बिना कोई खास परिणाम की अपेक्षा रखते हुए कि चलो कोई परिणाम मिले तो मिले नहीं तो न सही। लेकिन जो परिणाम मिले वे अप्रत्याशित थे।

इसके बाद मैंने कई और प्रयोग किए पपीतों पर, साग सब्जी आदि पर और इन सब प्रयोगों से एक बात तो स्पष्ट रूप से प्रतीत हुई मुझे कि अग्निहोत्र की राख से निश्चित रूप से लाभ होता है खेती में। इसमें कोई दो मत नहीं हो सकते। इन प्रयोगों ने मुझे भविष्य में इस दिशा में अधिक व्यवस्थित ढंग से प्रयोग करने के लिए साहस प्रदान किया है प्रेरणा दी है।

गेहूं में अप्रत्याशित लाभ

– डॉ. रामाश्रय मिश्रा, वैज्ञानिक/एसोसिट प्रोफेसर
डिपार्टमेंट ऑफ जेनेटिक्स एण्ड प्लान्ट ब्रीडिंग
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय – कानपुर (उ.प्र.)

आधुनिक युग में रासायनिक खादों एवं दवाओं के बेतहाशा उपयोग से निश्चय ही कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है किन्तु साथ ही यह भी पाया गया कि इनकी वजह से मानव स्वास्थ्य को भी गंभीर खतरा पैदा हुआ है। हवा, पानी, मिट्टी और अनाज के प्रदूषण ने हम मनुष्यों और वनस्पति जगत् के अस्तित्व को ही संकट में डाल दिया दिया है। भारी मात्रा में कृषि भूमि बंजर होती जा रही है। कृषि वैज्ञानिक इस बात से चिन्तित है और इच्छुक हैं कि कृषि कार्य के लिए ऐसी पद्धति व साधन अपनाये जाएं जो जीव जगत् के लिए निरापद हों और भूमि की उर्वराशक्ति को भी सहेज सके साथ ही पौष्टिक अन्न भी हमें दे सकें। वह पद्धति ऐसी हो जो मानव जीवन तथा प्रकृति के बीच सन्तुलन बनाये रखे।

ऐसी कृषि पद्धति वेदों के माध्यम से पाई जा सकती है, जिनके अनुसार होम, यज्ञ या अग्निहोत्र ऐसा वातावरण उत्पन्न करता है जिसमें भरपूर अनाज उगाया जा सकता है ऐसा अनाज रासायनिक खादों और विषैली दवाओं के कुप्रभाव से मुक्त रहता है। आज के युग में यह तीव्रता से महसूस किया जा रहा है कि अग्निहोत्र कृषि पद्धति

को आधुनिक सभ्यता से परिचित कराया जाए। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर कानपुर में पिछले 4–5 वर्षों से गेहूं, ज्वार तथा कुछ सब्जियों पर अग्निहोत्र के परीक्षण किए गए हैं।

गेहूं

गेहूं पर जो परीक्षण किया गया उसमें तीन कृषि पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

(1) अग्निहोत्र कृषि पद्धति (अकृप)

(2) रासायनिक कृषि पद्धति (राकृप)

(3) कन्ट्रोल।

इस परीक्षण में 'के 816' जाति का गेहूं बीज इस्तेमाल किया गया। विभिन्न कृषि पद्धतियों का विवरण निम्नानुसार है :–

1. अग्निहोत्र कृषि पद्धति (अकृप)

200 ग्राम बीज को गोमूत्र, गोबर तथा अग्निहोत्र भस्म के मिश्रण से उपचारित किया गया। उपचारित बीज को छाया में अच्छी तरह सुखाया गया। चार बड़े आकार के सीमेन्ट के गमलों में अग्निहोत्र भस्म मिश्रित मिट्टी को भरा गया। किसी भी प्रकार की खाद इस मिट्टी में नहीं मिलाई थी। अग्निहोत्र कृषि से संबंधित सारे कार्यों के दौरान "त्र्यम्बकम् होम" किया गया। प्रतिदिन ठीक सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय इन गमलों के पास विधिपूर्वक अग्निहोत्र किया गया। 27 नवम्बर, 1985 को पूर्णिमा तिथि पर इन

गमलों में उपरोक्त प्रकार से उपचारित बीज बोया गया। हर सातवें दिन अग्निहोत्र भस्म तथा त्र्यम्बकम् यज्ञ की भस्म के मिश्रण को पौधों पर छिड़का गया। निन्दाई गुड़ाई व पानी देने के समय मिट्टी में अग्निहोत्र भस्म डाली गई।

2. रासायनिक कृषि पद्धति (राकृप)

200 ग्राम गेहूं बीज को प्रचलित कृषि पद्धति से उपचारित किया गया। 'अकृप' में उपयोग किए गए आकार के चार सीमेन्ट के गमलों में बीज बोया गया। निर्धारित मात्रा में एनपीके खादों को मिट्टी में मिलाया गया। राकृप के गमलों को अकृप के गमलों से 500 मीटर दूर रखा गया। बीज उसी तारीख यानि 27.11.85 को बोया था। अच्छी फसल के लिए आवश्यक सारे कार्य किए गए। तीनों पद्धतियों में पौधों की संख्या एक समान रखी गई।

3. कन्ट्रोल

200 ग्राम बीज बिना किसी उपचार के चार समान आकार के सीमेन्ट के गमलों में 27–11–85 को बोया गया। मिट्टी में कोई खाद नहीं मिलाई गई। कन्ट्रोल वाले गमलों को अकृप के गमलों से 500 मीटर दूर राकृप के गमलों के साथ रखा गया।

इस प्रकार हर गमले में तीनों पद्धतियों में 20–20 पौधे रखकर बाकी निकाल दिए गए। निरीक्षण के परिणाम ज्ञात करने के लिए हर गमले पर लेबल (Tag) लगाए गए। अंकुरण, पकने की अवधि, पौधों की ऊंचाई, प्रति पौधा कल्लों (टिलर्स) की संख्या तथा प्रति पौधा गेहूं के दानों की उपलब्धि का रेकार्ड रखा गया।

परिणाम तथा निष्कर्ष

तालिका क्र. 1 में जो परिणाम दिए गए हैं वे स्पष्ट करते हैं कि अकृप में 95% अंकुरण हुआ जबकि राकृप तथा कन्ट्रोल में केवल 80%। बेहतर अंकुरण क्षमता के बीजों ने अग्निहोत्र कृ. प. में अग्निहोत्र भस्म द्वारा बीजोपचार का महत्व रेखांकित किया। अकृप में उत्तम बीजांकुरण का दूसरा कारण नित्य अग्निहोत्र का आचरण भी हो सकता है जो राकृप तथा कन्ट्रोल के गमलों के पास नहीं किया गया।

फसल पकने की अवधि का जो रिकार्ड रखा गया उससे मालूम हुआ कि अकृप (132) तथा राकृप (135) की तुलना में कन्ट्रोल (125) में पकने की अवधि कम रही। यह एक सामान्य अवधारणा है कि जब अतिरिक्त पोषक आहार दिया जाता है तब पौधे की उत्पादन क्षमता बढ़ती है, जिससे पकने की अवधि भी बढ़ जाती है।

उपर्युक्त परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है अग्निहोत्र कृषि पद्धति ने रासायनिक कृषि पद्धति की तुलना में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है।

तालिका क्र. 1

कृषि पद्धति	अंकुरण प्रतिशत	पकने की अवधि	पौधों की ऊंचाई से.मी. में	कल्लों की संख्या	प्रति पौधा उपज/टेस्टवेट (ग्राम में)
अग्निहोत्र कृषि पद्धति (अकृप)	**95**	**132**	**65-75**	**6**	**7-40**
रासायनिक कृषि पद्धति (राकृप)	80	135	51-67	5	6-38
कन्ट्रोल	80	125	61-90	4	5-67

अंगूर की खेती और अग्निहोत्र

– डॉ. बी.जी. भुजबल

महाराष्ट्र की जलवायु में अंगूर की फसल उगाना कठिन है साथ ही उसका अध्ययन भी उतना ही कठिन है। सन् 1967 से, जब पूना युनिवर्सिटी में एम.एस.सी. में अध्ययनरत था तभी से मैं अंगूर की फसल पर शोधकार्य से जुड़ा हुआ हूं। आगे चलकर अंगूर उत्पादकों को अनेक दिक्कतों का समना करते पाकर उनकी समस्याओं को महात्मा फुले कृषि विश्वविद्यालय पूना के कृषि महाविद्यालय के शोधकर्ताओं द्वारा रखा गया।

मेरे इस विषय से जुड़ने से पहले ही से अंगूरो की संकर किस्मों पर खोज कार्य शुरू हो चुका था। ऐसी रिपोर्टे मिली थी कि संकर अंगूर के बीजो के अंकुरण की रफ्तार बहुत ही धीमी और कम थी। जब मैंने गणेशखिंड फ्रूट एक्सपेरिमेंटल स्टेशन ,पूना, 7 में अंगूर की फसलों का सैकड़ों बार संकरण किया और बीजों पर हार्मोन उपचार, त्वक्च्छेदन आदि आधुनिक उपचारों का ज्प्रयोग किया तब भी परिणाम निराशाजनक ही निकले। अंकुरण का प्रतिशत बहुत कम था यानी 20 प्रतिशत से भी नीचे और कुछ बीजों को तो अंकुरण के लिए 300 दिन की देर लगी।

इन्हीं परेशानियों के बीच मैंने अग्निहोत्र के बारे में जाना और सोचा कि अंगूर के बीजों पर क्यों न अग्निहोत्र उपचार पद्धति आजमाई जाये।

स्थानीय पंचांग में सूचना थी कि 16 फरवरी 1980 को

सूर्यग्रहण है। मैं पहले पढ़ चुका था कि अमावस्या का दिन बीजोपचार तथा बीजवपन के लिए सर्वोत्तम होता है।

इसी पार्श्वभूमि के साथ और इस संयोग से लाभ उठाने के विचार से **मैंने अनाबेशाही, पंढरी साहेबा और काली साहेबा आदि स्थानीय अंगूर की किस्मों के बीजों के साथ संकर बीजों को चुना, जिन्हें "थाम्पसन सीडलेस" नामक किस्म के नर पौधे से संकरित किया गया था।**

इस प्रयोग को ढंग से करने के लिए मैंने 10–2–80 को छुट्टी की दरख्वास्त दे दी क्योंकि प्रयोग का प्रारम्भ 16–2–80 से होना था।

अतिरिक्त उपचार के लिए स्थानीय जातियों के अंगूर की जड़विरहित कलमें भी ले ली थी।

प्रायोगिक :

ये सभी बीज एवं जड़विहीन कलमें इस प्रकार रखे गये कि उन्हें अग्निहोत्र का धुंआं मिल सके। अग्निहोत्र के बाद मैंने ''त्र्यंबकम् यजामहे'' मन्त्र से यज्ञ किया और दो घंटे बाद इन बीजों एवं कलमों को पुनः अग्निहोत्र भस्म से उपचारित किया तथा उन्हें तैयार गमलों में बोया/लगाया। दूसरी ओर अनउपचारित बीजों एवं कलमों को अलग से रखा गया एवं लगाया/बोया गया था।

निरीक्षण :

मुझे तथा मेरी पत्नी एवं मित्रों को जो मेरे इस प्रयोग की हंसी उड़ा रहे थे यह देखकर अत्यंत आश्चर्य हुआ कि **पहला पौधा बीज**

बोने के कुल 21 दिन बाद ही ऊपर आया। इस निरीक्षण के परिणामों को इस लेख के अन्त में दिये टेबल में देखा जा सकता है।

दूसरा प्रयोग केवल किशमिश (मुनक्का) बनाने का था। आजकल अंगूर से किशमिश बनाने का काम महाराष्ट्र में नहीं होता है। कुछ लोग प्रायोगिक तौर पर डिहाइड्रेशन और धूप में सुखाने की पद्धति से यह काम कर रहे हैं।

मैंने अंगूर उत्पादकों से अंगूर के कुछ गुच्छे लिए और उन्हें उस स्थान पर लटका दिया जहां मैं अग्निहोत्र करता हूं। उसी जाति एवं खेत के अंगूरों के गुच्छे उत्पादको किसानों के पास धूप में सुखाकर किशमिश बनाने हेतु रखे गये। 21 दिन बाद मेरे पास के अंगूर सूख चुके थे और 35 दिन बाद मैंने उन गुच्छों को नीचे उतारा और चखा। यह किशमिश दीखने में एवं स्वाद में बहुत अच्छी थी। यह विशेष ध्यान देने योग्य बात है अनाबेशाही किस्म से बनाई गई किशमिश बहुत अच्छी थी जबकि इस जाति के अंगूरों में टी एस एस कान्टेक्ट बहुत कम होता है।"थाम्पसन सीडलेस" से बनी किशमिश भी बाजार में उपलब्ध किशमिश के समान अच्छी थी।

तीसरा प्रयोग एक अंगूर उत्पादक किसान के खेत में ही किया गया।ग्राम पिंपलगांव बसवन्त जिला नासिक का यह श्री पुंडलिक खोडे नामक कृषक अपनी अंगूर की फसल के लिए बहुत अधिक चिंतित था और उसे सन्देह था कि अंगूर की खेती के लिए लिया बैंक का कर्ज भी चुका सकेगा या नहीं।

उसके खेत में नित्य अग्निहोत्र किया गया और अग्निहोत्र की राख पौधों में दी गई। फलों की तुड़ाई के समय उत्पादन को रिकार्ड किया गया और परिणाम सन्तोषजनक थे। कृषक श्री खोडे ने कभी इस पद्धति में विश्वास नहीं किया था, परन्तु प्रत्यक्ष परिणामों ने उसे चकित कर दिया।

हर एक अंगूर, हर गुच्छा, रंग, स्वाद, वजन और मिठास में बेहतर था। लगभग 150 स्थानीय कृषकों ने इस प्रयोग एवं इसके परिणामों को देखा और स्वीकारा कि अग्निहोत्र से प्राप्त यह फसल उस क्षेत्र की सर्वोत्तम फसल थी।

अंगूर पर अग्निहोत्र का प्रभाव - द्वारा डा बी जी भुजबल

प्रभाव	केवल प्रचलित पद्धति एवं खाद के प्रयोग से	केवल अग्निहोत्र एवं उसकी भस्म से	प्रचलित पद्धति एवं अग्निहोत्र से
1) बीज के अंकुरण पर	अंकुरण के लिए 6 महीनों से अधिक समय।	21 से 28 दिन में अंकुरण और अंकुरण 50%	—
2) कलमों में जड़ें निकलने पर	80% में जड़ें निकलीं।	100% में जड़ें निकली।	100% में जड़ें निकलीं।
3) गुच्छे के विकास पर	औसत गुच्छे का वजन 0.45 कि.ग्रा.	औसत गुच्छे का वजन 0.45 कि.ग्रा.	औसत गुच्छे का वजन 0.525 कि.ग्रा.
4) क्वालिटी पर	टी.एस.एस. 20% था।	टी.एस.एस. 24% था।	टी.एस.एस. 23% था।
5) बीमारियों पर	अधिक बीमारियां।	कोई बीमारी नहीं।	कम बीमारियां।
6) रंग पर	हरापन लिए पीला।	सुनहरा हुए पीला।	फीका पीला।
7) तुड़ाई के समय	लगभग 30% नुकसान	नुकसान बिल्कुल नहीं।	10% नुकसान।

उपरोक्त प्रयोग श्री पुंडलीक खोडे के अंगूर के बगीचे में नासिक जिले के पिपलगांव बसवंत ग्राम में "थाम्पसन सीडलेस" जाति के अंगूर पर वर्ष 1979–80 के दौरान किए गए।

1) महात्मा फुले कृषि विश्वविद्यालय के सहायक कृषिविद् डा. बी. जी. भुजबल द्वारा अग्निहोत्र किया गया।

2) श्री रानडे, मैनेजर स्टेट बैंक आफ इण्डिया द्वारा हवन किया गया।

3) प्रचलित पद्धतियों एवं खादों का प्रयोग बगीचे के मालिक श्री पुंडलिक खोडे ने किया।

श्री खोडे प्रसन्न हुए एवं अग्निहोत्र से प्राप्त परिणामों से संतुष्ट हुए। इसके अतिरिक्त मुनक्का बनाने के लिए भी प्रयोग किया गया।

यह प्रयोग मार्च 1980 में हुआ। अंगूरों के 80 गुच्छे छत से लटकाये गये और उनके नीचे नियमित रूप से (दिन में 2 बार) अग्निहोत्र किया गया। 21 दिन के अन्दर सूख गये उनसे बनी मुनक्का की क्वालिटी आयातित मुनक्का के समान उत्तम थी। इस प्रयोग हेतु "थाम्पसन सीडलैस" किस्म को लिया गया था।

अन्न संरक्षण और अग्निहोत्र भस्म

– डा. रामाश्रय मिश्र

चावल, गेहूं, चना, मूंग, बाजरा, ज्वार आदि आम भारतीय घरों में गृहिणियां 3 महीने 6 महीने या सालभर का इकट्ठा खरीद कर रखतीं हैं।

उपरोक्त अनाज व दालों को यदि तीन माह के खर्च की मात्रा में अगर जमा करके रखा जाता है तो उसमें कीड़े आदि हो जाते है, ऐसा पहले परीक्षण में दिखाई दिया है।

अनाज संग्रहित करने के लिए रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग प्रायः किया जाता है। परन्तु इनके अति भयंकर परिणाम होते है। साथ ही इनकी वजह से संग्रहित अन्न में कुछ ही हफ्तों में दुर्गन्ध आने लगती है। ये रासायनिक कीटनाशक अन्ततः मानव को ही हानि पहुंचाते हैं इसलिए अग्निहोत्र भस्म का उपयोग करके अन्न संग्रह करने की संभावना के बारे में एक परीक्षण किया गया।

यह परीक्षण महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ के हार्टिकल्चर विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डा बी जी भुजबल ने किया। श्रीमति भुजबल, श्रीमति होले तथा श्रीमति खिलारी ने इस परीक्षण में सहायता दी।

प्रयोग का विवरण

"अ" = कन्ट्रोल

"ब" = अग्निहोत्र भस्म 1%

"स" = बी एच् सी (10%) पावडर, मात्रा 1%

"द" = साधारण राख

एक ही समूह से एक किलो मात्रा में अन्न या दाल प्रत्येक परीक्षण प्रकार (अ, ब, स, द) के लिए लिया गया।

"ब", "स", "द" के नमूनों पर एक ही दिन प्रक्रिया की गई।

परिणाम

प्रक्रिया के दिन से 90 दिन बाद संग्रह किये अन्न में कीड़े लगने की मात्रा साथ की तालिका में देखिये।

प्रत्येक नमूना 100 ग्राम का था।

तालिका 1

		अ	ब	स	द
ज्वार	:	23	0	0	7
बाजरा	:	27	0	0	25
मूंग	:	115	0	0	116
चना	:	190	0	0	87
चावल	:	10	0	0	10
गेहूं	:	17	0	0	3

90 दिन बाद प्रत्येक प्रकार के धान्य में जो वजन कम हुआ उसे नीचे की तालिका में ग्राम के तौल में देखें।

प्रत्येक नमूना 1 किलो का।

तालिका 2					
		अ	ब	स	द
ज्वार	:	200	0	50	95
बाजरा	:	225	0	40	80
मूंग	:	820	0	100	210
चना	:	790	0	80	200
चावल	:	10	0	0	10
गेहूं	:	190	0	20	85

प्रक्रिया के 90 दिन बाद आरगेनोलेप्टिक परीक्षण किया गया। यह परीक्षण 10 गृहणियों द्वारा हुआ। क्वालिटी को प्रतिशत में नीचे की तालिका में देखें। यह क्वालिटी निर्धारण गंध, दर्प, सुरक्षितता और सुलभता इन कसौटियों पर आंका गया।

तालिका 3					
		अ	ब	स	द
ज्वार	:	40	90	70	60
बाजरा	:	30	80	40	50
मूंग	:	0	100	40	40
चना	:	0	100	40	40
चावल	:	60	75	60	50
गेहूं	:	50	90	70	60

निष्कर्ष :

1. अग्निहोत्र भस्म और बी.एच सी. (10%) पावडर के कीटरोधक गुण समान पाये गए।
2. कन्ट्रोल (''अ'') नमूने में मूंग और बाजरा को सर्वाधिक नुकसान होना पाया गया।
3. वजन में कमी होने की मात्रा अग्निहोत्र भस्म और बी.एच.सी. (10%) नमूनों में सबसे कम रही।
4. कन्ट्रोल और बी.एच.सी. दोनों नमूनों को गन्दी बू या दुर्गन्ध के कारण गृहिणियों ने अनुपयोगी बताया।
5. अग्निहोत्र भस्म तैयार करना और उस भस्म से अन्न संग्रह करने की प्रक्रिया सबसे सरल, सस्ती और निरापद होने का अभिप्राय गृहिणियों ने व्यक्त किया।

इन चार प्रयोगों के अलावा भी कई परीक्षण हुए हैं किन्तु विस्तारभय से उन्हें नहीं दे रहा हूं।

संक्षेप में :

महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ राहुरी, अहमदनगर महाराष्ट्र के डॉ. बी.जी. भुजबल ने आंवले की कलमों पर अपने दूसरे प्रयोग में अग्निहोत्र भस्म से बने पेस्ट का एयर लेयरिंग पर प्रभाव देखा। उन्होंने बताया है कि 5 ग्राम अग्निहोत्र भस्म + 5 ग्राम गोधृत + 5 ग्राम मधुमक्खियों के मोम के मिश्रण से तैयार किए गए पेस्ट (लेई) को लेयरिंग (कलम) पर लगा देने से उसमें 70 प्रतिशत तक जड़ें निकल आईं। जबकि अन्य विधियों द्वारा मात्र 10 प्रतिशत (on

application of 1000 ppm IBA in lanolin) एवं केवल 4 प्रतिशत (control) ही जड़ें निकल पाईं। लेयरिंग (कलम) को पेड़ से अलग करने के पश्चात् अग्निहोत्र भस्म पेस्ट में 60 प्रतिशत कलमों का जिन्दा रहना (survival) दर्ज किया गया, जबकि अन्य विधियों में सरवाइवल का प्रतिशत शून्य पाया गया।

तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बतूर के डा. जेकलिन ए. सेल्वाराज ने अग्निहोत्र भस्म का अन्न भण्डारण में उपयोग जानने के लिए चने की एक प्रजाति में एक प्रयोग किया। इन्होंने भण्डारण में अग्निहोत्र भस्म और केप्टान (Captan) का तुलनात्मक अध्ययन किया और देखा कि हॉर्सग्राम के भण्डारण में अग्निहोत्र भस्म और केप्टान का प्रभाव लगभग एक समान ही था। उन्होंने भण्डारण में अग्निहोत्र भस्म का ही उपयोग करने की सलाह दी है।

पुणे विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ एनवायरनमेंटल साइन्सेस में शोधरत श्री विश्वास चौहान एवं कु. अपर्णा नरवणे ने अपने प्रयोग में देखा है कि अग्निहोत्र भस्म का प्रयोग करने से जमीन में केंचुओं की संख्या में बेहताशा वृद्धि हो जाती है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि जमीन में केंचुओं की संख्या में वृद्धि होने से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है। इसलिए उपरोक्त प्रयोग एवं कृषकों के अनुभव के आधार पर यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि अग्निहोत्र भस्म, भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ाने में अत्यंत उपयोगी है।

गदग, कर्नाटक के श्री प्रदीप तापस का यह अनुभव है कि फसलों की उपज बढ़ाने में अग्निहोत्र वातावरण एवं अग्निहोत्र भस्म का चमत्कारिक प्रभाव है। उनका कहना है कि अग्निहोत्र वातावरण एवं भस्म का प्रभाव प्रत्यक्ष खेत में दिखाई देता है। इसलिए वैज्ञानिक

इस पर शोध करें या न करें, उन्हें कोई परिणाम मिले या न मिले; हम तो अग्निहोत्र वातावरण में अपनी खेती कर रहे हैं और कर्नाटक में हमारे जैसे हजारों की संख्या में किसान अपनी खेती अग्निहोत्र वातावरण में करके इसका पूरा–पूरा लाभ उठा रहे हैं।

अभी कानपुर में डॉ. आर.एल. श्रीवास्तव, डा. आर. मिश्रा, डा. वाय.पी. मलिक तथा डा. बी.आर. गुप्ता, ये सभी कृषि वैज्ञानिक अग्निहोत्र कृषि पर चार विभिन्न परीक्षणों (Projects) में अनुसंधानरत हैं। इनके परिणाम प्रारंभिक अवस्था में उत्साहवर्धक हैं। जो कृषि वैज्ञानिक, बागवानी वैज्ञानिक इस सन्दर्भ में अधिक जानकारी के इच्छुक हों वे पुस्तक के पीछे दिए गए पते पर सम्पर्क कर सकते हैं। उनको सहयोग करने के लिये मैं सदैव तत्पर रहूंगा। वे चाहें तो अंग्रेजी या हिन्दी दोनों भाषाओं में पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

सिद्धांत खण्ड

कृषि कार्य में क्रांतिकारी परिवर्तन का साधन, यज्ञ

– पं. वीरसेन वेदश्रमी, इन्दौर (म.प्र.)

यज्ञ एक अनुपम फर्टिलाइजर है। सिंचाई का महान साधन है। अन्न को कृमियों से सुरक्षित करने की प्रबल औषधि है। कम प्रयत्न एवं कम खर्च में अत्यधिक उत्पत्ति देने का परम सहारा है।

यज्ञ से उत्पन्न पौष्टिक वायु, जल, धूम्र एवं भस्म से अन्न में रस, स्वाद आरोग्य एवं पौष्टिकता होगी। मल एवं कृत्रिम खादों से उत्पन्न अन्न से मनुष्य क्रूर, हिंसक, सर्वनाशक हो रहा है, दया, प्रेम, परोपकार आदि सात्विक भावना से रहित हो चुका है।

अन्न प्राणियों का प्राण है। अविचार पूर्ण विज्ञान ने अधिक अन्न की उत्पत्ति की प्रतिस्पर्धा से अन्न, जल, वायु, प्राण सभी को दूषित कर दिया है। सांख्यिकी घोषणाओं में अन्न की वृद्धि दिखाई जाती है – परन्तु हमारे देश के गरीब ही नहीं, अब तो मध्यम वर्ग के व्यक्ति भी समुचित मात्रा में खाद्य पदार्थ प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

यज्ञ से घृत, दूध, मक्खन, अन्न भी बढ़ेंगे। यज्ञ की नीति के व्यापार से अन्न खाद्यादि पदार्थों के भाव भी घटेंगे। यज्ञ की भावना से त्याग एवं परोपकार की वृद्धि होगी तथा एक दूसरे के आर्थिक शोषण के बदले पालन करने की भावना बढ़ेगी और अंततः विश्व की युद्ध विभीषिकाओं का अन्त भी होगा।

मानव जीवन के लिए अन्न की अनिवार्य आवश्यकता है। अन्न की उत्पत्ति के लिए कृषि कार्य करना पड़ता है। इस कृषि कार्य को हम जितना अधिक विद्या, विज्ञान, विवेक और पुरुषार्थ के साथ करेंगे उतनी ही अधिक और उत्तम उत्पत्ति का लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

सुसस्याः कृषी स्कृधि (यजुर्वेद 4/10)

वेद आदेश देता है कि हम उत्तम अन्नों की कृषि करें एवं करावें। क्योंकि दूषित अन्न की उत्पत्ति का समाज के जीवन पर खराब प्रभाव पड़ता है। दूषित या मलिन पदार्थों से उत्पन्न अन्न के सेवन करने से समाज के व्यक्तियों के शरीर एवं मन के संस्कार भी दूषित हो जाते हैं। बुद्धि भी दूषित हो जाती है। अतः वेद ने अच्छे सुसंस्कृत अन्नों की कृषि करने का आदेश दिया।

कृषक विद्वान होने चाहिए

वर्तमान समय में हमारे देश में किसान या कृषकों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। उसे अपठित एवं विवेक–शून्य माना जाता है उसे केवल परिश्रमशील व्यक्ति माना जाता है। आज का पठित व्यक्ति श्रम नहीं करना चाहता, अतः वह कृषक नहीं बनता। जगह–जगह कृषि विश्वविद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय खुले हैं, किन्तु वे कृषकों के लिए नहीं, केवल एक दो–प्रतिशत वर्ग – अंग्रेजी–दानों के लिए ही शिक्षा प्रदान करते हैं। उनमें पढ़कर लोग किसान नहीं, शहरों में रहने वाले, कुर्सी पर बैठने वाले, हुक्म चलाने वाले बाबू ही बनते हैं। परन्तु वेद में कृषि कार्य करने वाले को बहुत विद्वान, योग्य, गंभीर विचार गुण युक्त होने के लिए लिखा है। जैसा कि –

सीरा युंजन्ति कवयो युगावितन्वत पृथक्।

धीरा देवेषु सुम्नया।। (यजुर्वेद 12/67)

इस मन्त्र में हल चलाने वाले कृषिकर्ता की योग्यता कवि (क्रान्तदर्शी) भविष्य का ज्ञान रखने वाला, दूरदर्शी धीर (ध्यानशील), बुद्धिमान, कृषि विद्या का जाननेवाला लिखा है। अर्थात कृषि की उन्नति के लिए सुयोग्य विद्वान एवं परिश्रमी होना आवश्यक हैं

कृषि के लिए भूमि - संस्कार

कृषि के लिए भूमि संस्कार की प्रथम आवश्यकता है। भूमि को संस्कारित करने का कार्य किसी न किसी रूप में सदा से होता रहा है। आजकल भूमि को कृषि के लिए संस्कारित करने के निमित्त विविध प्रकार की रासायनिक खादों का उपयोग किया जाता है। बड़े–बड़े नगरों का मल और कीच–कूड़ा खेतों में फैलाया जाता है। इन दोनों का जो भी परिणाम भूमि एवं उत्पन्न अन्न या भोज्य–पदार्थों पर पड़ता है वह अंशतः लाभदायक प्रतीत होता होगा, परन्तु परिणाम में अनिष्टकारी और विशेष व्ययसाध्य हो जाता है जिससे कृषि उत्पत्ति में व्यय की वृद्धि भी होती जाती है और उस अन्न के सेवन से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।

भू-संस्कार का सरल उपाय यज्ञ

वेद ने भूमि संस्कार का सरल उपाय यज्ञ बताया है –

पृथिवी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् (यजुर्वेद 18/12)

अर्थात यज्ञ के माध्यम से पृथिवी को सामर्थ्यवान बनाना चाहिए। जिस स्थान पर कृषि करनी हो वहां नित्य प्रातः एवं सायंकाल सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय अग्निहोत्र करना चाहिए।

प्रातः एवं सायंकाल में किया हुआ यज्ञ उस समय बहने वाली वायु में मिल कर पृथिवी का स्पर्श करता हुआ पार्थिव कणों को यज्ञ के सुगन्धित, रोग नाशक और आहुतियों के धूम से संस्कारित करेगा। प्रातः काल पृथिवी की ऊपरी पर्त में आर्द्रता, नमी रहती है और उस समय की वायु की गति पृथिवी की कक्षा के अनुसार गति करती है। अतः उसका घर्षण पृथिवी के ऊपरी भाग पर होने से आर्द्रता के कारण यज्ञ–धूम का उसमें विलीनीकरण या अवधारण विशेष रूप से होगा। इस प्रकार अनायास ही यज्ञ के माध्यम से कृषि भूमि उत्तरोत्तर संस्कारित होती जाएगी। इस संस्कारित भूमि में जो अन्न उत्पन्न होगा वह भी उत्तम एवं आरोग्यप्रद होगा तथा अधिक मात्रा में भी होगा। दुर्गन्धित मलों के खाद एवं रासायनिक खादों से भूमि को संस्कारित करने में जो अतिव्यय होता है उसकी कमी हो जाने से कृषकों के उत्पादन व्यय में कमी होगी और उन खादों के प्रसारण कार्य पर होने वाले व्यय की भी कमी होगी।

भूमि में उत्पादन सामर्थ्य की वृद्धि

जिस भूमि पर यज्ञ के धूम आदि का प्रभाव होता है उसकी मिट्टी में घृत, दूध, पौष्टिक एवं रोगनाशक हवि के सूक्ष्म पदार्थों तथा मधुर पदार्थों का मिश्रण स्वभावतः बढ़ जाता है। दिन के सौर ताप से एवं रात्रि की शीतलता, आर्द्रता एवं ओस के माध्यम से हव्य पदार्थों का क्रमशः पृथिवी के कुछ नीचे के भाग में संग्रह भी होता जाता है और प्रभाव बढ़ता है। इस प्रक्रिया से भूमि बहुत उर्वर होती जाती है और उसमें नमी का प्रभाव उत्पन्न होने लगता है जिससे कम सिंचाई में भी वनस्पतियों की वृद्धि होने में सहायता होती है तथा उपज भी अधिक होती है। इसलिए वेद ने कहा है –

कृषिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् (यजुर्वेद : 18/9)

अर्थात्, "हमारी कृषि यज्ञ के द्वारा फले–फूले, समृद्धि को प्राप्त हो।" कृषि–भूमि को उपयोगी बनाते समय यज्ञ का प्रयोग किया जाए तथा बाद में भी यज्ञ किया जाना चाहिए। इससे पृथिवी में अपूर्व उत्पादन–सामर्थ्य उत्पन्न होगी। जहां हम कृषि के लिए बहुत व्यय करते हैं वहां थोड़ा व्यय यज्ञ के लिए भी करना चाहिए।

हलों द्वारा भूमि को संस्कृत करना

भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिए हलों का प्रयोग प्राचीन काल से हो रहा है। वेद ने कहा है –

शुनं सुफाला विकृषन्तु भूमिम् (यजुर्वेद : 12/69)

अर्थात्, "अच्छे–अच्छे फालयुक्त हल भूमि को सुखपूर्वक जोतें।" भूमि के मृदु, कठोर आदि भेदों के कारण हमें हलों के फाल भी अनेक प्रकार के बनाने चाहिए। हल चलाने से पृथिवी की ऊपरी सतह मुलायम हो जाती है। पार्थिव कणों का नीचे ऊपर परिवर्तन तथा मिश्रण भी होता है। कृषि के अयोग्य जो पदार्थ उस भूमि में होते हैं उनका निःसारण होने से भूमि बीज को धारण करके अपने गर्भ में स्थिर करने में समर्थ होती है और जल भी अधिक धारण एवं संचित करने में समर्थ होती हैं

पाटला द्वारा भूमि का धृत मधु आदि से संस्कार

हलों द्वारा जोती हुई भूमि को विशेष संस्कृत करने के लिए वेद ने एक अद्‌भुत एवं उत्तम मार्ग यह बताया है –

घृतेन सीता मधुना समज्यताम् (यजुर्वेद : 12/70)

अर्थात् पाटले को घी, मधु, पराक्रम देने वाले दूध व जलादि से खूब बार–बार सींचते हुए फेरना चाहिए। इससे पाटले के घृत, मधु दुग्ध आदि के अंश की रगड़ पार्थिव कणों से होगी जिससे उनका सूक्ष्म अंश मिट्टी में प्रविष्ट होगा और पृथिवी में बल, माधुर्य आदि प्रदान करने के गुणों की वृद्धि होगी। पृथिवी के संस्कारों का प्रभाव उसकी उपज पर भी स्वभावतः पड़ेगा। इसी क्रिया को यज्ञ के साथ करने के लिए यजुर्वेद 18/7 में –

सीरं च मे लयश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्

इन शब्दों में प्रकट किया गया है। अर्थात् मेरा हल चलाना और तत्पश्चात भूमि को सम करना यज्ञ के द्वारा समर्थ बनाना चाहिए। तात्पर्य यह है कि कृषि के प्रत्येक कार्य के साथ यज्ञ का सहयोग, संगति करने से विशेष उपज होगी। इस प्रकार होम क्रिया के माध्यम से, तथा घृत, मधु, दुग्धादि सिंचित पाटला फेरने की क्रिया से भूमि और भी संस्कारित होती है। मलादि दुर्गन्धयुक्त पदार्थों तथा दूषित जलों का प्रयोग कृषि में करने से दुर्गन्ध, मलादि के संस्कारों से युक्त उत्पन्न अन्न अवश्य दूषित एवं तामसिक ही होगा। सात्विक गुण युक्त अन्न नहीं होगा। सात्विक गुणयुक्त अन्न के न होने से उसके सेवन से शरीर मन और बुद्धि पर भी तामसिक प्रभाव होते हैं तथा जन–समाज को दुष्परिणाम भोगने पड़ते हैं।

यज्ञ की भस्म का कृषि में प्रयोग

कृषि के लिए यज्ञ करने चाहिए और उन यज्ञों की भस्म खेतों में फैला देनी चाहिए। वायु और जल के माध्यम से भी यह कार्य हो

सकता है। यज्ञ की भस्म में उन्हीं पदार्थों की सुगन्ध सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहती है। जहां यज्ञ की भस्म का कृषि क्षेत्र में प्रसारण होगा वहां के अन्नादिक में विशेष प्रकार की सुगन्ध होगी और स्वाद भी विशेष मधुर होगा। अन्न के दाने एवं फलादि बड़े होंगे और कृषि को हानि पहुंचाने वाले कृमि तथा रोगादि भी नहीं होंगे। वेद ने कहा है –

पृथिवीं भस्मना पृण (यजुर्वेद 6/21)

अर्थात् पृथिवी को यज्ञ की भस्म से पूरित करना चाहिए।

बीज बोने का वैदिक प्रकार

खेत में हल आदि चलाकर नाली क्यारी आदि बनाकर उसमें बीज वपन करने के लिए स्थान करके बीज बोने चाहिए। इस बीच वपन कार्य (बोनी) के समय वेदवाणी का भी प्रयोग करना चाहिए तथा आहुति आदि का भी प्रयोग करना चाहिए जैसा कि ***युनक्त सीरा वियुगा तनुध्वं कृतयोनौ वपतेहबीजम् गिरा च (यजुर्वेद*** 12/68) में कहा गया है। बोते समय वेदवाणी एवं आहुति के प्रयोग के लिए मन्त्र में 'गिरा' एवं 'च' शब्द है। यजुर्वेद अ. 18 एवं 30 में भी –

"वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदितं नाम वचसा करामहे" -

इन शब्दों द्वारा पूर्वोक्त कार्य की पुष्टि की है। अर्थात् विविध प्रकार के उत्तम अन्न के उत्पन्न करने में मातृवत्, कारूणरूपा भूमि को वेदवाणी से युक्त करें। यजुर्वेद अ. 18 मं. – 1 में भी

वाजश्च में प्रसवश्च में . . . . यज्ञेन कल्पन्ताम् – इन शब्दों द्वारा, अन्न और उसकी उत्पत्ति यज्ञ के द्वारा समर्थ हो यह बताया है। अर्थात् खेत में बीज बोया जाए तो यज्ञ करने से मन्त्र की ध्वनि

का भी संस्कार पड़ेगा और उसका उपज पर प्रभाव पड़ेगा। संगीत, मन्त्र, ध्वनि आदि का कृषि उपज पर प्रभाव आजकल अनेक परीक्षणों द्वारा अच्छा अनुभव किया गया है तथा फलोत्पत्ति में वृद्धि का परिणाम भी ज्ञात हुआ है। परन्तु वेद तो यह भी बताता है कि बोने के समय भी संगीत, मन्त्र–ध्वनि आदि का प्रयोग करना चाहिए और उत्पत्ति की विद्यमानता में भी करना चाहिए।

बीजों को संस्कारित करना

जिन बीजों को बोना है उनका भी संस्कार करना चाहिए। वैदिक परम्परा में बीजों का भी संस्कार होता है। जिस अन्नादि को गौ खाकर पुनः गोबर के माध्यम से पृथिवी को दे देती हैं। वह अन्न बहुत ही शक्ति वाला और अधिक उत्पत्ति देने वाला हो जाता है। अन्नादि संस्कारित करने का यह एक प्रकार है।

दूसरा प्रकार यह है कि हमें अन्न, फलादि जिन विशिष्ट गुण वाले बनाने हैं उन्हीं औषधियों के जल और रसों के साथ उन बीजों को बोना चाहिए तथा बाद को भी उन्हीं औषधियों के जलों और रसों से उन्हें यथोचित सींचना चाहिए। ये प्रक्रिया बहुत ही उपयोगी है। वेद ने बताया है कि –

''संवपामि समाप ओषधीभिः समोषधयो रसेन'' **(यजुर्वेद 1/21)** अर्थात् औषधियों के जल तथा औषधियों के रसों के साथ अच्छी प्रकार बोने की क्रिया करनी चाहिए। वैदिक दृष्टि से मलादि दुर्गन्ध युक्त पदार्थों के कृषि में प्रयोग को स्थान ही नहीं है। केवल अर्थ की दृष्टि से अन्न अधिक उत्पन्न करना लक्ष्य नहीं होना चाहिए अपितु जन–साधारण की आत्मिक, मानसिक, बौद्धिक और शारीरिक

उन्नति एवं सात्विक भावों की वृद्धि की दृष्टि से अन्न उपजाना चाहिए।

कृषि के लिए जलों को संस्कारित करना

कृषि के लिए सिंचाई का जल दो प्रकार से प्रधान रूप ने प्राप्त होता है। प्रथम, ऋतु अनुसार वर्षा का जल तथा द्वितीय, पृथिवी से, नदी, तालाब, नहर, कुएं आदि से प्राप्त जल। इन दोनों प्रकार के जलों का भी संस्कार यज्ञ द्वारा करने से कृषि अच्छी होती है। वर्षा के जलों का संस्कार तो यज्ञ के माध्यम से अत्यन्त सरलता से हो जाता है। वेद ने कहा है कि ––

वृष्टिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् **(यजुर्वेद 18/9)** अर्थात् हमारी वृष्टि यज्ञ द्वारा सामर्थ्य युक्त हो। वर्षा ऋतु में बड़े–बड़े यज्ञ करने से वृष्टि जल हवि द्रव्यों से भावित होकर सामर्थ्यवान् बन जाएगा। यज्ञ का धूम वायु द्वारा मेघों से स्पर्श करने तथा वृष्टि जल के बरसने से अन्तरिक्षस्थ धूम का वृष्टि जल में घुलने से जल का संस्कार हो जाता है। वही संस्कारित जल पृथिवी पर नदी, तालाबों एवं कुओं आदि में आ जाता है। अतः दोनों प्रकार के जलों का संस्कार यज्ञों द्वारा सरलता से हो जाता है जैसा कि – ***आपश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्*** **(यजुर्वेद 18/14)** द्वारा विधान किया है। इसके अतिरिक्त पार्थिव जलों को यज्ञ की भस्म एवं औषधियों के मिश्रण द्वारा भी संस्कारित किया जा सकता है। आजकल तो औद्योगिक प्रदूषण वायु मण्डल में बढ़ जाने से तेजाब युक्त वर्षा का परिणाम भी ज्ञात हुआ है। तो यज्ञ की हवि के धूम से अवश्य वृष्टि सुसंस्कारित होगी और शुभ परिणाम होंगे।

यज्ञ द्वारा वायु एवं सूर्य रश्मियों का संस्कार

कृषि के लिए वायु और सूर्य–ताप की आवश्यकता होती है। इनको कृषि के लिए यज्ञ द्वारा संस्कारित करने का वेद ने विधान किया है। ***यजुर्वेद अ. 12 मं. 69 में - "शुनासीरा हविषा तोषमाना"*** *पद* आया है। ''शुनः'' वायु को कहते हैं। ''शु'' अन्तरिक्ष का नाम है। अन्तरिक्ष में निवास एवं विचरण करने वाला वायु शुनः संज्ञक है। सीरः आदित्य, सूर्य को, उनकी रश्मियों को कहते हैं। अन्तरिक्ष में वायु रहता है। मेघ भी अन्तरिक्ष में रहते हैं। सूर्य रश्मियां भी अन्तरिक्ष में व्याप्त रहती हैं। यज्ञ करने से वायु, जल और आदित्य – रश्मियों पर यज्ञ का प्रभाव स्वभावतः पड़ता है। वेद कहता है कि ये दोनों यज्ञ की हवि से संस्कारित एवं तुष्टिकारक होते हैं। अतः यज्ञ द्वारा संस्कारित वायु एवं सूर्य रश्मियों का कृषि पर और भी अधिक प्रभाव होगा। वेद ने – मरुतश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् (यजुर्वेद 18/17) – यज्ञ के द्वारा मरुतों को समर्थ बनाने का निर्देश दिया है। अतः कृषि के लिए यज्ञ अति आवश्यक है।

अन्न के लिए यज्ञ की उपयोगिता

बीज बोने के पश्चात जब अन्न अंकुरित हो, जब उनके पौधे बढ़ें, जब उनमें बाल या फल आवें, जब वे पकने लगें इन सभी अवस्थाओं में भी यज्ञ की बहुत उपयोगिता है। यजुर्वेद अ. 18 मं. 1 में सभी अन्नों को यज्ञ द्वारा सामर्थ्यवान् करने का निर्देश है। मन्त्र निम्न प्रकार है :

''व्रीहश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियंगवश्च मे णवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।''

अर्थात् हमारे सभी प्रकार के अन्न यज्ञों के द्वारा सम्पन्न होने चाहिए। उपर्युक्त सभी अवस्थाओं में यज्ञ करने से यज्ञ का अन्नों में, उनमें रसोत्पत्ति में, उनकी वृद्धि तथा संरक्षण में बहुत लाभ होगा। पृथिवी पर अन्न फलादि की उपज दो प्रकार की है – एक के लिए हलादि नहीं चलाए जाते हैं उसकी स्वाभाविक उत्पत्ति होती है, दूसरे प्रकार के अन्न वे हैं जिनके लिए कृषि कार्य करना पड़ता है। इन्हीं को वेद में क्रमशः अकृष्टपच्या और कृष्टपच्या कहा है। इन दोनों प्रकार की उपज यज्ञ के द्वारा बढ़ानी चाहिए। वेद ने कहा है – "कृष्टपच्याश्चमे अकृष्टपच्याश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्" (यजुर्वेद 18/14) मेरी हल जोतने से उत्पन्न कृषि और बिना हल जोते हुए होने वाली उपज दोनों यज्ञ से समर्थ बनती है। अतः कृषि के लिए यज्ञ अनिवार्य कर्म है।

यज्ञ द्वारा कृषि में दृष्ट लाभ

आज कृषि की उन्नति करने के लिए विज्ञान एवं यन्त्रों का आश्रय लिया जा रहा है। यज्ञ भी वैज्ञानिक कार्य है। इसका उपयोग लेकर कृषि कार्य में क्रांति उत्पन्न की जा सकती है। पृथिवी को रासायनिक खादों के अनिष्टकारी परिणामों से बचाया जा सकता है। अन्न को कीटनाशी रसायनों के विषों से बचाया जा सकता है। यज्ञ का प्रयोग लेखक ने एक ऐसे आम के वृक्ष पर किया जिसमें फल नहीं आते थे। यज्ञ के प्रभाव से उसमें उस वर्ष बहुत फल आये। इसी प्रकार आम, अमरूद, अनार के वृक्षों में भी यज्ञ का प्रयोग करने से उनमें फलोत्पत्ति परिणाम ज्ञात हुआ। बैंगन के खेत में यज्ञ से कीड़ों का न लगना ज्ञात हुआ। जिनके किचन–गार्डन में नित्य यज्ञ होता है उनकी सब्जियों में स्वाद की विशेषता रहती है। यज्ञ की भस्म खेत

में डालने से चने के बड़े दानों का लाभ ज्ञात हुआ, अपेक्षाकृत उन खेतों के जिनमें वर्तमान खादों का प्रयोग किया गया। कृषि के लिए यज्ञ वरदान के रूप में है। यज्ञ द्वारा कृषि से वर्षा का लाभ तो होगा ही परन्तु सन्तुलित वर्षा होने से कृषि के नष्ट होने का भय भी नहीं रहेगा। यज्ञ कार्य अल्प समय में तथा अल्प व्यय से हो जाता है और उसका शुभ परिणाम बहुत अधिक होता है।

यज्ञ का विश्व पर अद्‌भुत प्रभाव

मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः (1)

मधु नक्तमुतोषसो मधु मत्पार्थिवं रजः।
मधु द्यौरस्तु न पिता (2)

मधु मान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः (3)

(यजुर्वेद अ. 13 मं. 27-29)

अर्थात् जो यजमान यज्ञ करता है उसके लिए मधुर एवं रसवाली हवाएं बहती हैं। नदियां मधुर रसवाली बहती हैं और औषधि अन्नादि मधुर रसवाले होते हैं। रात्रि मधुर हो जाती है उषाएं भी मधुर, अनुकूल हो जाती हैं। पृथिवी लोक, माता के समान मधुर हो जाती है और द्युलोक पिता तुल्य मधुर, अनुकूल हो जाता है। वनस्पतियां, वृक्षादि मधुर रसवाले हो जाते हैं। सूर्य–रश्मियां मधुर, सन्ताप रहित, आदि माधुर्य गुणयुक्त हो जाती हैं। गवादि पशु भी मधुरगुण युक्त हो जाते हैं। अतः कृषि के लिए यज्ञ का उपयोग अधिकाधिक करना चाहिए और उसका लाभ संसार को देना चाहिए।

क्योंकि यज्ञ – **वसोः पवित्रमसि शतधारं (यजुर्वेद 1/3)** – पवित्र हैं, पवित्रकर्ता है तथा सैकड़ों एवं हजारों प्रकार से विश्व का धारण एवं पोषण करने वाला है।

यज्ञ के द्वारा कृषि करने से कम खर्च होता है और महंगी रासायनिक खादों एवं कीटनाशी दवाओं का व्यय घट जाने से उत्पादन व्यय में कमी होती है, जिससे जनता को अन्न सस्ता प्राप्त होगा और कृषकों के लाभ में भी कमी नहीं होगी, अपितु वृद्धि ही होगी। यज्ञ से उत्पन्न अन्न निर्विष होगा तो उसके सेवन से जनता निरोग होगी, चिकित्सा पर होने वाला उनका व्यय भी घट जाने से जनता को अर्थ लाभ होगा।

अन्नंच मे यज्ञेन कल्पन्ताम् कृषिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्

वेद के इन सन्देशों का प्रचार कर कृषि कार्य में क्रांति उत्पन्न करनी चाहिए। यज्ञ ही कृषि का महान यन्त्र है – यही महान तन्त्र है और यही महान् विज्ञान है।

अग्निहोत्र कृषि ऐसे करें

– डा. रामाश्रय मिश्र

किसानों की रूचि देखकर और उनकी आवश्यकता महसूस कर हम अग्निहोत्र कृषि की तकनीक आप तक पहुंचानें का प्रयास कर रहे हैं। निम्नवत् तकनीक को ध्यान में रखते हुए यदि किसान भाई अपनी खेती – बागवानी करें तो उन्हे आश्चर्यजनक लाभ प्राप्त हो सकता है।

भूमि की तैयारी

बुआई से पूर्व की जानेवाली सिंचाई के समय पांच किलोग्राम अग्निहोत्र भस्म प्रति एक एकड़ खेत के हिसाब से पूरे खेत में बिखेर देना चाहिए। यदि अग्निहोत्र भस्म वजन के हिसाब से कम हो तो गाय के गोबर के कण्डे का चूरा करके उसमे अग्निहोत्र भस्म मिलाकर प्रति एकड़ 10 किलो के हिसाब से फैला दें।

जिन क्षेत्रों में बुआई से पूर्व सिंचाई नहीं की जाती वहां उपरोक्त मात्रा में भस्म को पानी में मिलाकर घोल तैयार कर लेना चाहिये और उसका छिड़काव खेत में बुआई से 2–3 दिन पूर्व कर देना चाहिये। भस्म की मात्रा को उपलब्धता के अनुसार घटाया या बढ़ाया भी जा सकता है। यदि अन्य ग्रामवासी अग्निहोत्र करते हों तो उनसे भी भस्म इकट्ठा कर लेना चाहिए ताकि कृषि के लिए भस्म की कमी न हो।

प्रयोगों एवं किसानों के अनुभवों से यह प्रमाणित हो चुका है कि

भूमि में अग्निहोत्र भस्म का इस्तेमाल करने से भूमि की उर्वराशक्ति को बढ़ाने वाले सूक्ष्म–जीवाणुओं की क्रियाशीलता बढ़ती है, केंचुओं की संख्या में वृद्धि हो जाती है, भूमि की जलधारण क्षमता भी बढ़ जाती है। साथ ही साथ भूमि जनित ऐसे विषाणु जो फसलों में बीमारी पैदा करते हैं, वे भी निष्क्रिय हो जाते हैं। अग्निहोत्र भस्म में NPK की मात्रा क्रमशः 0–34, 97.0 एवं 2.32 प्रतिशत पाई जाती है। नत्रजन एवं पोटाश की मात्रा रासायनिक खादों की तुलना में नगण्य ही है। इसलिए यह भस्म किस प्रकार इतना प्रभावी है यह वैज्ञानिकों के लिए एक शोध का विषय है।

एक अनुमान के अनुसार यह भस्म चूंकि पिरामिड आकार के ताम्रपात्र में गाय के गोबर से बने कण्डे की प्रज्वलित अग्नि में ठीक सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय चावल एवं गाय के घी की दो–दो समंत्रक आहुतियां देने के पश्चात् तैयार होती है और यह भस्म सम्पूर्ण दिन एवं रात पिरामिड आकार के पात्र के माध्यम से सम्पूर्ण वातावरण की सूक्ष्म शक्तियों एवं सूर्य–ऊर्जा को खींचती रहती है, औषधियुक्त हो जाती है।

अग्निहोत्र भस्म में व्याप्त प्रचण्ड शक्तियों का विश्लेषण करना शायद वर्तमान में उपलब्ध वैज्ञानिक उपकरणों की सीमा से बाहर हो, परन्तु भस्म में व्याप्त इन कल्याणकारी शक्तियों के प्रभाव को तो फसलोत्पादन के माध्यम से देखा ही जा सकता है।

जिन खेतों में ''अग्निहोत्र कृषि पद्धति'' के अनुसार खेती की जावे उनका मिट्टी परीक्षण (SOIL TESTING) प्रत्येक 4–5 महीनों के अन्तर पर कराते रहना चाहिए। इससे भूमि की उर्वराशक्ति में जो बढ़ोत्तरी होगी उसका स्पष्ट ज्ञान आप सभी को हो सकेगा।

मृदा–विज्ञान (SOIL-SCIENCE) के वैज्ञानिकों के लिए तो यह एक शोध का विषय हो सकता है।

बीज का उपचार

अनेक प्रकार के रोगाणु व विषाणु ऐसे होते हैं जो बीज जनित होते हैं अर्थात् बीजों से ही पैदा होते हैं। ये बीज जनित रोगाणु फसल में अनेक प्रकार की बीमारियों का कारण बनते हैं। इनसे बचने के लिए प्रचलित कृषि पद्धति में विभिन्न प्रकार की रासायनिक दवाइयों से बीजोपचार किया जाता है। उपरोक्त बीजोपचार से फसलों में बीज–जनित रोग होने की सम्भावना तो कम हो जाती है परन्तु रासायनिक दवाओं का दुष्प्रभाव तो अंकुरित बीजों व मासूम पौधों को भुगतना ही पड़ता है। इन दुष्परिणामों से बचने का उपाय "अग्निहोत्र कृषि पद्धति" में है।

इस पद्धति के अनुसार बुआई से चौबीस घंटे पूर्व बीज का अग्निहोत्र भस्म + गोमूत्र से उपचार कर लेते हैं। 20 ग्राम अग्निहोत्र भस्म को गोमूत्र के साथ मिलाकर एक घोल तैयार कर लेते हैं। यह घोल एक किलो बीज उपचारित करने के लिए पर्याप्त होता है। बीज उपचारित करने के बाद छाँह में सुखा लेना चाहिए ताकि बुआई करने में आसानी हो जाए। यदि बीज की जगह नर्सरी का प्रयोग करना हो जैसे धान की बेड या शाक–सब्जियों या फल–फूलों की नर्सरी; तो उपरोक्त घोल (भस्म+गोमूत्र) में आवश्यकतानुसार पानी मिलाकर घोल को पतला बनाया जा सकता है और उसमें नर्सरी की बेड को या पौध को 3–4 घंटों के लिए डुबोकर रख देना चाहिये। तत्पश्चात् उसकी रोपाई सम्पन्न कर लेनी चाहिए।

सिंचाई/निराई/गुड़ाई (INTERCULTURE OPERATIONS)

सिंचाई, निराई, गुडाई आदि आवश्यकतानुसार प्रचलित कृषि पद्धति की भांति ही करना चाहिए। प्रत्येक सिंचाई के समय खेत के बिल्कुल पास अग्निहोत्र भस्म को एक कपड़े में बांधकर पानी की नाली में इस प्रकार लटका देना चाहिए कि पानी भस्म को घोलते हुए खेत में जाए। इसका उद्देश्य भस्म को पानी के बहाव के साथ पूरे खेत में फैलाने का होता है।

जहां सिंचाई नहीं करनी होती या वर्षा के पानी पर निर्भर रहना होता हो, ऐसी दशा वर्षा के बाद सूखे भस्म को आवश्यकतानुसार पानी में घोलकर पूरे खेत में खड़ी फसल पर बिखेरना या छिड़क देना चाहिए। एक एकड़ खेत के लिए 5 कि.ग्रा. भस्म + 1000 लीटर पानी से बना घोल पर्याप्त होता है। भस्म की मात्रा कम हो तो जैसा कि पहले बताया था गाय के गोबर के सूखे चूरे को छानकर कमी की पूर्ति कर ले और इस मिश्रण को पानी में घोल लें। उपरोक्त घोल का छिड़काव पौधों में फूल आने से थोड़ा पहले (परागण का समय बचाकर) और दानों में दूध आने के समय (AT THE TIME OF SEED FORMATION) अवश्य कर देना चाहिए। इन समयों में पौधों को प्रदूषण जनित दुष्परिणामों से सुरक्षित रखना अत्यन्त आवश्यक होता है। यह कार्य अग्निहोत्र भस्म के छिड़काव से साध्य होता है।

परागण के समय घोल न बनाकर सूखे भस्म को पौधों के ऊपर बिखेरा जाए तो लाभ प्राप्त हो सकता है। घोल बनाकर परागण के समय छिड़काव करने से परागण का कार्य ठीक प्रकार से सम्पन्न होने में रुकावट आ सकती है।

बीमारियों, कीड़े-मकोड़ों आदि से फसल रक्षा

किसी भी प्रकार की बीमारी का प्रकोप या हानिकारक कीड़ों मकोड़ों–इल्लियों का प्रादुर्भाव होने पर भस्म का घोल बनाकर तत्काल पौधों पर छिड़काव कर देना चाहिए। यह छिड़काव प्रत्येक 2–3 दिन के अन्तर पर तब तक करते रहना चाहिए जब तक बीमारी या कीड़ो–इल्लियों का प्रभाव समाप्त न हो जाए।

फलदार पेड़ों में टूट–फूट या काट–छाँट होने पर भस्म को पानी में मिलाकर लेई जैसी बनाकर टूट–फूट या कटी जगह पर लेप जैसा लगा देने से पेड़ों की पूर्ण सुरक्षा हो जाती है।

फसल की कटाई-मड़ाई व भण्डारण

फसल के ठीक प्रकार से पक जाने के बाद कटाई करके अनाज को लम्बे समय तक भण्डारित करना होता है। फलों व सब्जियों को 4–6 दिन या सप्ताह भर बिना किसी नुकसान के रखना होता है। इसके लिए भी किसान भाई अनेक प्रकार की रासायनिक दवाओं का इस्तेमाल करता है। ये दवाइयां अत्यन्त जहरीली होती हैं और इनका अनाज में काफी समय तक प्रभाव रहता है। इस प्रकार रखे गए अनाज, फल या सब्जियों का इस्तेमाल भोजन के रूप में अत्यन्त नुकसानदेह होता है। इससे अनेक प्रकार की बीमारियों के शिकार हम हो जाते हैं।

इन दुष्परिणामों से बचने के लिए भी अग्निहोत्र कृषि में उपाय हैं। अनाज को भण्डारित करने के पूर्व धूप में अच्छी तरह सुखा लें। या तो पूरे अनाज को अग्निहोत्र भस्म में अच्छी तरह मिला लें या फिर

भण्डारण पात्र में पहले अग्निहोत्र भस्म की एक तह बिछा ले। पात्र की आधी ऊंचाई तक अनाज भरने के बाद फिर भस्म की एक तह बिछा लें और पूरा पात्र भरने के बाद तीसरी और अंतिम तह बिछा दें। ऐसा करने से किसी भी प्रकार के रोगाणु या कीड़ों इल्लियों का प्रभाव भण्डारित अनाज पर नहीं होगा। फल एवं सब्जियों को भी काफी समय तक सुरक्षित बनाए रखने में अग्निहोत्र भस्म अत्यंत प्रभावी साबित हो सकता है।

इस प्रकार से भण्डारित अनाज, फल व सब्जियों की केवल कीड़ों से सुरक्षा ही नहीं होती बल्कि उनकी गुणवत्ता में भी किसी तरह की गिरावट नहीं आती।

ध्यान देने योग्य कुछ बातें

1. भूमि की तैयारी से लेकर कटाई, मड़ाई व भण्डारण तक नित्य बिना किसी नागे के अग्निहोत्र होना अनिवार्य है।
2. एक एकड़ से 200 एकड़ तक खेत के बीच में एक अग्निहोत्र आचरण काफी। अधिक बड़े फार्म के लिए सेन्टर के अलावा चारों दिशाओं में एक–एक, इस प्रकार पांच स्थानों पर अग्निहोत्र हो।
3. बुआई के समय, फसलों में फूल आने के समय व दाने बनते समय खेत में कम से कम 12 घन्टे का महामृत्युंजय यज्ञ अत्यन्त प्रभावी हो सकता है। हर अमावस्या–पूर्णिमा को 1 से 24 घन्टे का अपनी क्षमता के अनुसार महामृत्युजंय यज्ञ हो। यज्ञ का आरंभ व अन्त व्याहृति होम से करे।

4. छिड़काव के लिए अग्निहोत्र भस्म (अग्निहोत्र पावडर) को महीन कपड़े से छानकर ही प्रयोग करें। छानते समय "त्र्यंबकं" या "गायत्री" या जो भी वेदमंत्र आता हो उसका मन ही मन में उच्चारण करें।

5. खेत में नित्य अग्निहोत्र आचरण का पालन करना असंभव होने की दशा में मात्र बुआई के समय, फूल आने व दाने बनते समय एक – एक सप्ताह के लिए भी खेत में अग्निहोत्र आचरण करना लाभदायक सिद्ध हो सकता है, वैसे यह वैज्ञानिको के लिए शोध का विषय भी हो सकता है।

6. यह ध्यान रहें कि अग्निहोत्र मूल यज्ञ है और व्याहृति होम तथा त्र्यंबकं मात्र इसके सहायक है, विकल्प नहीं।

7. पुस्तक के शुरू में दिए गए अनुभव तथा, वैज्ञानिक परीणाम एवं सिद्धान्त अग्निहोत्र कृषि पद्धति को पूर्णतया स्पष्ट करते है। किन्तु फिर भी यदि किसी को कोई प्रश्न या शंका हो तो वह पत्र लिखकर या मिलकर समाधान प्राप्त कर सकता है।

8. अग्निहोत्र, व्याहृति होम तथा महामृत्युंजय यज्ञ की जो विधि यहां दी है इसीका आचरण भूमंडल के सभी देशो के किसान कर रहें हैं। इन यज्ञों विधियों में किसी के भी कहने पर कोई परिवर्तन करने पर परिणाम के लिए हम या अग्निहोत्र कृषि पद्धति पुस्तक जिम्मेदार नहीं होगें।

9. कृषक ने या कृषक के परिवार के व्यक्तियों ने ही ये सभी हवन करने चाहिए। पुरोहितों – पंडितों द्वारा न करवायें।

आवश्यक सुझाव

– संपादक

यज्ञ

1. यथासंभव खेत के केन्द्र में नित्य सूर्यास्त और सूर्योदय पर अग्निहोत्र करें।
2. हर अमावस्या–पूर्णिमा को 24 घंटे, 12 घंटे या 6 या चार घंटे का महामृत्युंजय यज्ञ करें।
3. कृषि से संबंधित प्रत्येक कार्य के आरंभ में पाच मिनिट का व्याहृति होम करें।

ये सभी यज्ञ किसान स्वयं करे या उसके परिवार के सदस्य, मित्र–परिचित मिलकर कर सकते हैं। दस एकड़ तक के खेतों में खेत के केन्द्र में एक अग्निहोत्र होना पर्याप्त है। 200 एकड़ के खेत में केन्द्र के अलावा खेत की पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी और दक्षिणी सीमा के निकट चार अग्निहोत्र करने के लिए कम से कम 8 X 8 फुट एक कुटिया सी बना लेना अच्छा रहता है जिससे सर्दी, गर्मी, बरसात यानी हर मौसम में निर्विघ्न रूप से अग्निहोत्र व अन्य यज्ञ सम्पन्न किए जा सकें। अग्निहोत्र की कुटिया थोड़ी बड़ी भी बनाई जा सकती है जिससे हवन के लिए आवश्यक गाय के गोबर के कण्डों को भी संग्रहीत किया जा सके। वर्षा के मौसम से पहले इतना संग्रह कर लेना चाहिये कि जिससे पूरे मौसम में अग्निहोत्र व अन्य यज्ञों के लिए कण्डे के ईंधन की कमी न पड़े। यदि आपका खेत या बगीचा काफी

छोटा, 2–4 एकड़ जितना हो और आप वहीं खेत में मकान बनाकर रहते हों तो अपने मकान के आंगन में आप अग्निहोत्र व अन्य यज्ञ कर सकते हैं, भले ही आपका मकान खेत के किसी भी सिरे पर क्यों न हो। यह कुटिया या आंगन का फर्श खेत की सतह से कुछ ऊंचे चबूतरे पर होना आवश्यक है।

अग्निहोत्र व व्याहृति होम करने में 2 से 5 मिनिट का समय लगता है। महामृत्युंजय यज्ञ इच्छा व सुविधानुसार 4 या 6 घंटे से लेकर 24 घंटे तक किया जा सकता है। इन तीनों यज्ञों में मुख्य ईंधन गाय या बैल के गोबर के सूखे कण्डे ही हैं। व्याहृति होम व महामृत्युंजय यज्ञ में यदि उपलब्ध हों तो आम, पीपल, बड, गूलर, खैर आदि व क्षों की, अंगुलियों की मोटाई और लम्बाई की समिधा (लकड़ी) को भी कंडो के साथ प्रज्वलन के लिए प्रयोग किया जा सकता है। खासकर बरसाती हवा से कंडों में नमी आ जाती है तब समिधा का प्रयोग प्रज्वलन में सहायक रहता है नित्य अग्निहोत्र व्याहृति होम (जिसे मंगल–हवन भी कहते हैं) तथा महामृत्युंजय यज्ञ के वेदमंत्र इतने सरल हैं कि एक पांच साल का बच्चा या अनपढ़ व्यक्ति एक दिन में इन मंत्रों को सुनकर याद कर सकता है। इन तीनों यज्ञों में पंडित–पुरोहित या पुजारी की कोई जरूरत नहीं होती। प्रत्येक किसान पुरुष, स्त्री और बच्चे इन यज्ञों को करें ऐसा ईश्वर की वेदवाणी का आदेश है। वैदिक यज्ञ हर जाति धर्म वर्ग और वर्ण का व्यक्ति कर सकता है। अग्निहोत्र में तो जन्म–मरण की छूत–छात भी नहीं लगती ऐसा वेद बताते हैं। अग्निहोत्र को अशुद्धि तो तब लगती है जब उसमें अहवनीय पदार्थ जैसे भैंस का घी या ऐसे व क्षों की लकड़ी जो कांटेदार हों या कड़वे फल देते हों, को जलाया जाए।

गाय का घी

यह सदा ध्यान रखें कि नित्य अग्निहोत्र में गाय का शुद्ध घी एवं चुटकी भर चांवल यही आहुति की सामग्री है। व्याहृति होम तथा महाम त्युंजय यज्ञों में भी गाय के घी की एक बूंद ही एक आहुति की सामग्री है। इन तीनों यज्ञों में कभी भी भैंस का घी तथा तथाकथित शुद्ध घी का इस्तेमाल न करें। गाय के घी की खपत अग्निहोत्र के लिए तो सिर्फ एक छटांक (50 ग्राम) प्रतिमाह है। व्याहृति होम की चार आहुति के लिए सिर्फ चार बूंद घी लगता है। समय समय पर व्याहृति होम करने के लिए अधिकतम 200 ग्राम घी प्रतिमाह लगेगा, अमावस और पूर्णिमा को 24 घंटे के लिए एक किलो के हिसाब से प्रतिमाह 2 किलो घी लगेगा। सब यज्ञों के लिए कुल मिलकर प्रतिमाह सवा दो या ढाई किलो घी लगेगा।

अच्छी तरह जान लें कि उपरोक्त वैदिक यज्ञों में सिर्फ गाय का ही घी लगता है। भैंस के घी के प्रयोग से उलटे परिणाम होंगे। इसलिए बाजार से तो कभी भी गाय का घी न खरीदें। अग्निहोत्र के आन्दोलन से जुड़े लोग गाय का शुद्ध घी अवश्य रखते हैं किन्तु वह भी क षि कार्य के लिए इतना घी आपको नहीं दे सकेंगे। वेद कहते हैं कि "गोषु यज्ञाः प्रतिष्ठिताः" यानी सारे यज्ञ गाय में प्रतिष्ठित हैं, यानी गाय के दूध–घी–गोबर के कंडे आदि के बिना यज्ञ हो ही नहीं सकता। किसान रासायनिक खाद और ऋण प्राप्ति के जितना समय और धन आज बरबाद कर रहा है। उसका हजारवां हिस्सा भी उसे स्वयं अपनी अग्निहोत्र क षि के लिए गाय का घी बनाने में नहीं लगेगा। वैसे यदि स्वयं के गाय–बैल आपके पास हो तो सोने में

सुहागा समझिये। लेकिन यदि नहीं हो तो जिन जिनके पास हों, उनके पास जाकर अपने सामने गाय का दूध निकलवा लायें। उसे लेकर डेरी पर पहुंचे। डेरी की क्रीम निकालने वाली मशीन को गरम पानी से धुलवाकर साफ करवालें। और गाय के दूध का क्रीम निकलवा लें। गाय के दूध में फैट (वसा) की मात्रा का जो स्थानीय अंदाज हो इस हिसाब से गाय का दूध ले जाएं ताकि एक बार में आपको 4–5 किलो क्रीम मिल सकें। इतने क्रीम से जो घी बनेगा वह इतना होगा कि एक–डेढ़ महीने तक सभी यज्ञों के लिए पर्याप्त होगा। दो चार गायें यदि आपकी स्वयं की हों तो आप घर में ही परंपरागत पद्धति से मख्खन निकालकर गाय का घी बना सकते हैं। गाय के दूध के दही के मख्खन से बना घी यज्ञीय कृषि के लिए सर्वोत्कृष्ट हव्य पदार्थ है।

मूल वैदिक संहिताओं तथा आयुर्वेद आदि चिकित्सा ग्रंथों में गाय के शुद्ध घी की अपार महिमा प्रदर्शित की गई है। और इसे दिव्य शक्तियों का सर्वाधिक प्रिय भोज्य पदार्थ माना गया है। इसे मनुष्यों के लिए भी आयु, पुष्टि, मेधा, प्रज्ञा, तेज, क्रान्ति, बलादि का संवर्धक बताया गया है। अनेक आयुर्वेदिक औषधियों में भी मेधा, प्रज्ञा, पुष्टि और बलवृद्धि के लिए मुख्य रूप से गोघ त का प्रयोग किया जाता है। ऋग्वेद में एक सम्पूर्ण सूक्त (4/58) गोघ त की स्तुति में मिलता है। ईश्वर की जो शक्ति है उसे ही श्री, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा तथा सरस्वती इन नामों से अभिहित किया गया है और इन्हें गोघृत रूप में ही प्रत्यक्ष माना गया है। अग्निहोत्र व्याहृतिहोम व महामृत्युंजय यज्ञ में इसीलिए गाय का घी अनिवार्य है। तो गाय की घी अपने घर में खुद ही बनाएं और यज्ञीय कृषि में इस्तेमाल करें। केवल यही

एकमात्र भरोसेमंद तरीका है जिससे आप गाय का शुद्धतम घी प्राप्त कर सकते हैं। कृपया गाय के दूध का जब पहली बार दही जमाएं तो उसमें भैंस के दही का जामन न देकर, इमली, फिटकरी, नींबू की सहायता से दही जमाएं।

गोबर के कण्डे

गाय–बैल दोनों के गोबर के अर्थात गोवंश के गोबर से बने कण्डे अग्निहोत्र व अन्य यज्ञों के ईंधन में प्रयोग किए जाते हैं। लेकिन जिस आकार प्रकार के कण्डे गांवों और कस्बों में बनाएं जाते हैं, उस तरह के कण्डे अग्निहोत्र के लिए नहीं चलेंगे। अग्निहोत्र करके अगर उसके पूरे नतीजे भरपूर ढंग से पाना चाहतें हों तो कण्डों को बनाने का तरीका बदलना होगा। अग्निहोत्र के ताम्बे या मिट्टी के पात्र का आकार निर्धारित है। इस छोटे से पात्र में आसानी से जमाएं जा सके इतनी मोटाई के कण्डे होने चाहिए यानी एक सेन्टीमीटर या एक ज्वार या गेहूं के रोट के बराबर। आकार भी कण्डों का रोट के आकार जितना हो, तो बहुत अच्छा होगा। इन कण्डों को पक्के फर्श पर या पक्की छत पर या सीमेन्ट के खाली बोरों को बिछाकर उन पर थापने से उनमें मिट्टी कंकड़, पत्थर, कचरा आदि विजातीय तत्व नहीं मिलते। इस आकार प्रकार के कण्डों को संग्रहित करना भी आसान रहता है और अग्निपात्र में ये जलते भी शीघ्र हैं। यदि इन कण्डों को दो टुकड़ों में तोड़कर सीमेन्ट के खाली बोरों को साफ करके उन्हीं में भरकर और सिलकर संग्रहीत करलें खासकर बरसात के मौसम से पहले तो वे सूखे बने रहेंगे और उन पर धूल आदि भी नहीं जमेगी। ताजा गोबर को कण्डे बनाने के

लिए उठाते समय भी ध्यानपूर्वक देखें कि गोबर की नीचे की सतह पर कंकड कचरा घास आदि न हो। लगा हो तो निकाल दें। गाय के गोबर को वेदों ने बहुत महत्व दिया है। खिल सूक्त के अंतर्गत ही श्री सूक्त है उसमें साफ तौर पर बताया गया है कि

गन्धद्वारां दुराधर्षां
नित्यपुष्टां करीषिणीम्।

जिस तत्व के कारण सम्पूर्ण जीवन प्रकाशित हो उसे "श्री" कहते हैं। ऐसे श्री सूक्त में ऐश्वर्य का निवास "करीषिणीम्" कहा है यानी गाय के गोबर का सूखा कंडा। संपूर्ण जीवन को प्रकाशित करने वाली शक्ति जो "श्री" नामक ईश्वरीय शक्ति है। वह केवल गाय के गोबर के कण्डें में रहती है। इसीलिए गोबर को 'गंधद्वारा' कहा गया है यानी इसके ज्वलंन से निकलने वाले धुएं की गंध में उपद्रवकारी जीवजंतु टिक नहीं सकते उन्हें भागना पड़ता है। गाय के गोबर के कण्डे का दूसरा विशेषण है "दुराधर्षा" यानी इसकी यह जो कीटाणुनाशक शक्ति है इसकी बराबरी अन्य कोई भी पदार्थ नहीं कर सकता। "नित्यपुष्टां" का अर्थ है। नित्य स्वास्थ्य सम द्धि सम्पन्नता देने वाला।

अग्निहोत्र कुटी में जिस अग्निपात्र में अग्निहोत्र करें वह पात्र सदैव एक ही स्थान पर रखा रहने दें। महाम त्युंजय और मंगल हवन अग्निहोत्र के पात्र में न करके दूसरे पात्र में करें। इस दूसरे पात्र को कहीं भी रखा जा सकता है। कुटिया में अन्य यज्ञ करने की जगह भी बदली जा सकती है, परन्तु अग्निहोत्र के पात्र की जगह हमेशा एक ही रहेगी। नित्य अग्निहोत्र भी एक ही व्यक्ति नियम पूर्वक करेगा, अन्य व्यक्ति जो वहां बैठा हो या बैठे हों, केवल अग्निहोत्र के

मंत्रों का उच्चारण मिलकर सकते हैं परन्तु आहुति एक ही व्यक्ति ने देनी है। यही बात मंगल हवन तथा महाम त्युंजय यज्ञ पर लागू होगी। बड़े खेतों में पांच जगह अग्निहोत्र करना होगा इसलिए पांच व्यक्ति अलग–अलग कुटियों में आहुतियां देंगे। नित्य अग्निहोत्र व यज्ञ करने वाले व्यक्ति यदि किसी कारणवश बीमार हो जाएं या उन्हें यात्रा पर जाना पड़े तो उनके विकल्प के तौर पर उनके स्थान पर अग्निहोत्र व यज्ञ कर सकें ऐसे व्यक्तियों को भी प्रशिक्षित कर तैयार रखना चाहिए ताकि ये सभी यज्ञ नित्य और नौमित्तिक रूप से नियमित होते रह सकें।

यदि खेत की सीमाओं पर मेड की तार बन्दी कर दें या कंटीले पौधों की बागड़ लगा दे तो खेत के पौधे पशुओं एवं अवांछित व्यक्तियों के उपद्रव से निश्चिन्त और निडर होकर पनपेंगे। खेत में जब भी जाएं पौधों के प्रति प्रेम से ओतप्रोत मन से जाएं। दुष्टता, क्रोध, हिंसा आदि की भावना मन में रखने वाला व्यक्ति जब खेत में जाता है तो पौधे भयभीत हो जाते हैं, सकुचा जाते हैं जिसका उनकी बढ़वार पर बुरा असर पड़ता है, यह वैज्ञानिक परीक्षणों से सिद्ध हो चुका है। किसान या क षि कर्मचारी भी जब उद्विग्न और उत्तेजित मनःस्थिति में हो तो खेत में न जायें। अपने खेत को ही मंदिर मस्जिद, गुरूद्वारा समझें और हर क षि कार्य प्रसन्नचित्त होकर उपासना समझ कर करेंगे तो पौधे कम खाद और कम पानी मिलने पर भी उम्मीद से ज्यादा पैदावार देंगे। अग्निहोत्र क षि पद्धति में इस तथ्य का अत्यंत महत्व हैं। अग्निहोत्र व अन्य यज्ञों के मंत्र वेदवाणी होने के कारण यह प्रभाव उत्पन्न करते हैं। यज्ञों में मंत्रों का उच्चारण बुलंद आवाज में करे परंतु चिल्लाते हुए नहीं।

समय की पाबंदी

नित्य अग्निहोत्र में समय की पाबंदी का बड़ा महत्व है। आपके गांव के आसपास के किसी बड़े शहर या कस्बे का जो आपके गांव से पचास किलोमीटर के भीतर किसी भी दिशा में हो नाम यदि हमें लिख भेजेंगे तो हम आपके क्षेत्र की साल भर के सूर्योदय सूर्यास्त की समय सारिणी भेज देंगे। कृपया उसी समय से अग्निहोत्र करें। घडी का इस्तेमाल तो आज हर कोई करता है। उसका वास्तविक उपयोग तो अब अग्निहोत्र करने पर पता चलेगा। अपनी घड़ी को ऑल इण्डिया रेडियो में समय समय पर आने वाले समाचारों के समय से नित्य ही मिला लिया करें। इस प्रकार आप सही समय पर अग्निहोत्र करके अग्निहोत्र कृषि का पूरा लाभ उठा सकेंगे। समय पर अग्निहोत्र करने पर ही अग्निहोत्र कृषि लाभदायक होगी, वरना नहीं होगी। समय का इतना महत्व है।

खेत बड़ा हो और पांच जगह पांच लोगों को अग्निहोत्र करना हो तो एक छठा व्यक्ति कुटिया में नियत समय से 10 मिनिट पूर्व एक घंटा जैसे पाठशालाओं में होता है 15–20 बार बजायें, जो खेत के चारों कोनों में बैठे अग्निहोत्र यज्ञ करने वालों को अग्निहोत्र का अग्नि सिलगाने का संकेत होगा। स्थानीय अग्निहोत्र समय सारिणी के अनुसार घड़ी देखकर ठीक सूर्योदय – सूर्यास्त के समय पर सिर्फ एक बार घंटे को जोर से बजाना चाहिए ताकि पांचों जगह एक साथ ठीक समय पर प्रज्वलित अग्नि में अग्निहोत्र किया जा सके। इस छठे व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह रोज अपनी घड़ी को समाचारों में दिए या बताये जाने वाले समय से मिलाकर रखें।

अग्निहोत्र भस्म

सिर्फ अग्निहोत्र भस्म के लिए यह नियम है कि अग्निहोत्र करने के बाद पात्र को उसी जगह रखा रहने दिया जाए। सुबह शाम जब भी अग्निहोत्र करने जाएं तभी पात्र में से पहले किए हुए अग्निहोत्र की भस्म को निकालें और फिर उसमें उस वक्त के अग्निहोत्र के लिए कण्डे जलाएं। निकाली हुई भस्म को एक बोरी या घड़े में इकट्ठी करें। अग्निहोत्र व अन्य यज्ञों की भस्म एक ही बोरी में भरी जा सकती है।

एक बार अग्निहोत्र करने के बाद अगले समय के अग्निहोत्र तक पात्र को न तो उठाया जाए न ही स्पर्श किया जाए। ताकि पात्र की रहस्यमय शक्तियां निर्विघ्न रूप से ब्रह्माण्डीय सूक्ष्म शक्तियों के साथ आवर्तन–प्रत्यावर्तन का चक्र अखण्डित बनाए रखें और उनका सूक्ष्म संस्कार अग्निहोत्र भस्म पर एवं वातावरण पर होता रहे। नित्य अग्निहोत्र की आहुतियां इस यज्ञ चक्र को गति देने के लिए "इग्नीशन" या स्टार्टर का काम करती हैं। अचूक समय पर अग्निहोत्र करने से ही यह संभव हो पाता है, अन्यथा नहीं। अग्निहोत्र के प्रत्येक अंग या साधन के सम्मिलित प्रभाव से अग्निहोत्र भस्म में वह शक्ति निर्माण होती है। जिसके गुणों को परख कर वैज्ञानिकों अग्निहोत्र करने वालों ने इसे चमत्कारी भस्म कहना शुरू किया है। दुनियां भर के लोग इसे मैजिक (चमत्कारी) पावडर कहते हैं।

व्याहृति होम व महाम त्युंजय यज्ञ

महामृत्युंजय यज्ञ तथा व्याहृति होम नित्य यज्ञ नहीं हैं, ये ही क्या अन्य सभी यज्ञ नैमित्तिक हैं। नित्य यज्ञ केवल अग्निहोत्र है। बेसिक या बुनियादी यज्ञ। अमावस्या और पूर्णिमा पर महाम त्युंजय यज्ञ होने से वह इन पाक्षिक संधिकालों के समय ब्रह्माण्डीय ऊर्जा और प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों के परिणामों से फसल की रक्षा करता है। वैसे अमेरिका तथा जर्मनी के किसानों का अनुभव है कि नित्य अग्निहोत्र के अलावा अमावस्या पूर्णिमा को 24 घंटे तथा प्रतिदिन चार घंटे महामृत्युंजय यज्ञ होना चाहिए। लेकिन यदि कोई जन–बल कम होने से इतना न कर सके तब भी हर कृषि कार्य से पूर्व व्याहृति होम के पश्चात् वह कृषि–कार्य भी सम्पन्न होते रहने तक महामृत्युंजय करें तो पर्याप्त है। ये दोनों नैमित्तिक यज्ञ अग्निहोत्र से उत्पन्न यज्ञ चक्र की गति को बढ़ाते हैं। उसे अधिक तीव्र बनाते हैं। "कृषि यज्ञेन कल्पन्ताम्" इस वेदाज्ञा के अनुसार बोनी, कटनी, निराई, गुड़ाई, सिंचाई रोपाई एवं हल–बखर करने से पहले पांच मिनट का व्याहृति होम अवश्य करना चाहिए।

अग्निहोत्र की भस्म को इन यज्ञों की भस्म में मिलाया जा सकता है, इस तरह पर्याप्त मात्रा में भस्म उपलब्ध हो सकेगी। सारी भस्म को मैदा छानने वाली छन्नी से छान कर ही प्रयोग करें। अग्निहोत्र के यज्ञीय वातावरण में यह भस्म एक बूस्टर (उत्प्रेरक) का काम करती है। इस भस्म के कारण भूमि में अधिक समय तक नमी बनी रहती है।और यह भस्म जमीन में मौजूद आवश्यक पोषक तत्वों को इस लायक (Bioavailable) बनाती हैं कि पौधे आसानी से इन्हें ग्रहण कर सकें। इसी के साथ यह भस्म उन भूमिगत कीटाणुओं को नियंत्रित करती है जो नुकसानदायक होते हैं।

प्राणरक्षक अग्निहोत्र

केवल प्राण रक्षक ही नहीं वरन् नवजीवनदायक भी। नित्य अग्निहोत्र का आचरण पर्यावरण प्रदूषण तो खत्म करता ही है साथ ही मन के लिए शांतिदायक एवं तुष्टि–पुष्टिदायक दायक कम्पन (वायब्रेशन्स) तथा व क्ष वनस्पतियों को लाभ दायक अपूर्व औषधिगुणों को वातावरण में निर्माण भी करता है।

अग्निहोत्र कौन करे।

कोई भी कर सकता है। बच्चे हों या बड़े, अमीर–गरीब, स्त्री–पुरूष, मनुष्यमात्र को अग्निहोत्र करने का अधिकार है।

जिस पर घर की और घर के अन्य सदस्यों के पालन–पोषण की जवाबदारी हो वह स्त्री या पुरूष, घर का मुखिया अग्निहोत्र करे तो इसका लाभ घर भर के सदस्यों को मिलता है। घर के अन्य सदस्य समय पर वहां उपस्थित रहें और केवल मंत्रोच्चारण करे।

घर के मुखिया की हारी–बीमारी या दौरे पर बाहर जाने की स्थिति में मुखिया की पत्नी या पति अग्निहोत्र करें। दोनों अनुपस्थित हों तब घर का अन्य कोई भी सदस्य, नौकर तक, अग्निहोत्र करें। फिर भी अगर कभी नागा हो ही जाए तो कोई हर्ज नहीं, ठीक उसी तरह, जिस तरह अगर आप रोज सुबह–शाम एक–एक चम्मच टॉनिक लेते हों और किसी दिन किसी वक्त एक बार नहीं ले पायें तो कोई नुकसान नहीं होता। अग्निहोत्र से सिर्फ कल्याण ही होता देखा गया है।

अग्निहोत्र की सामग्री क्या है?

1. ठीक सेमी–पिरामिड आकार का ताम्बे या मिट्टी का बर्तन। यह अग्निपात्र सिर्फ माधवाश्रम में ही उपलब्ध होगा, बाजार में नहीं मिलता या किसी अग्निहोत्र शिक्षक के पास मिलेगा।

2. आपके शहर या आसपास के पचास किलोमीटर क्षेत्र का रोज के सूर्योदय–सूर्यास्त का वर्ष भर का टाइम–टेबिल। अग्निहोत्र करने के इच्छुक को यह समय सारिणी आश्रम से उपलब्ध कराई जाती है।

3. एक समय के अग्निहोत्र के लिए सिर्फ दो बून्द गाय का शुद्ध घी व दो चुटकी चावल। चावल वहीं ले जो घर में प्रयोग करते हैं। महीने भर के लिए ढाई सौ ग्राम चावल बीन कर टूटे चावल निकाल दें और साबुत (अक्षत) कच्चे चावल किसी शीशी में भर कर रख लें। गाय का शुद्ध घी भी पचास ग्राम की शीशी में, जो एक महीने के लिए पर्याप्त होता है, माधवाश्रम द्वारा उपलब्ध करवाया जाता है। इतना घी घर में भी आसानी से बनाया जा सकता है। घी सिर्फ गाय का ही होना अनिवार्य है।

4. गाय के गोबर के शुद्धता से बनाये गए कंडे या उपले। एक समय के अग्निहोत्र के लिए पतले–पतले छोटे से दो कंडे लगते हैं।

5. कंडे जलाने के लिए कपूर और माचिस। देशी कपूर बाजार में मिलता है और माचिस तो खैर, हर घर में मिलेगी ही।

अग्निहोत्र कैसे करें !

मान लीजिए कि आज तारीख 1 जुलाई 1999 की। सूर्यास्त का समय है 7 बजकर 6 मिनिट। तो इस समय से दस मिनिट पूर्व पिरामिड आकार के पात्र में कपूर की सहायता से गाय के गोबर के कंडो के टुकड़े आगे बताए गए ढंग से जमाकर जला दें। अग्निहोत्र के समय तक आग पक कर तैयार हो जायेगी। तब समय से एक–दो मिनिट पहले एक हाथ की हथेली पर दो चुटकी चावल रखें और दो बून्द गाय का घी दूसरे हाथ की अंगुलियों से मलकर सब चांवलो में चुपड़ लें। इन चावलों के दो बराबर हिस्से कर दें। आपकी हथेली पर अब दो आहुतियां तैयार हैं। जैसे ही घड़ी में 7.06 मिनिट हों, आहुतियों के दो भागों में से एक भाग दूसरे हाथ की पांचों अंगुलियों से उठा लें और बुलन्द आवाज में बोलें।

"अग्नये स्वाहा" (स्वाहा कहते ही दूसरे हाथ की अंगुलियों में पकड़े चांवल आंग में डाल दें) आहुति देते हुए शेष मन्त्र कहे **"अग्नये इदम् न मम"**। यह हुआ पहला मन्त्र और, पहली आहुति।

तुरन्त बाद हथेली पर रखे बचे हुए चावल उठाएं और बोलें, **"प्रजापतये स्वाहा"** (चावल आग में छोड़ते हुए कहे) **"प्रजापतये इदम् न मम"**। यह दूसरा मन्त्र और दूसरी आहुति। दोनों आहुतियों के जलने में मुश्किल से दो मिनिट लगेगें। या तो धुंआ निकलेगा या लौ। इन दो मिनिट तक रीढ़ की हड्डी सीधी रख कर बैठै। द ष्टि जलती हुई आहुति पर रखें। आहुति भस्म हो जाने पर उठ जायें। शाम की अग्निहोत्र विधि बस इतनी ही है। शाम के अनुसार ही सुबह भी सूर्योदय पर अग्निहोत्र करना है। सिर्फ पहले मन्त्र में परिवर्तन होगा।

सुबह का पहला मन्त्र

सूर्याय स्वाहा, सूर्याय इदम् न मम।

(पहली आहुति दे दें)

प्रजापतये स्वाहा, प्रजापतये इदम् न मम।

ये मन्त्र सभी लोग कहें, पर आहुति सिर्फ एक ही व्यक्ति दे।

पिरामिड पात्र : ऊर्जा का भंडार

अग्निहोत्र जिसमें किया जाता है वह पात्र अपने आप में संसार का एक अनूठा आश्चर्य है। यह पात्र तांबे और मिट्टी के अलावा अन्य किसी धातु या पदार्थ का नहीं होता। इसका निश्चित आकार है–ऊपर 14.5 x14.5 तला 5.25 x 5.25 तथा ऊंचाई 6.5 से.मी.। न इससे छोटा न बड़ा। तांबे के अग्निपात्र और मिट्टी के पात्र भी माधवाश्रम लागत मूल्य में सेवा भावना से उपलब्ध करवाता है। बाजार में मिलने वाले पात्र एक तो शुद्धतम तांबे के नहीं होते, दूसरे सही आकार के नहीं होते इसलिए अग्निहोत्र के लिये बेकार हैं।

पिरामिड शब्द का अर्थ है वह आकार जिसके बीच अग्नि समान ऊर्जा विद्यमान हो। पिरामिड के अन्दर कुछ विलक्षण किन्तु आधुनिक विज्ञान को अब तक अज्ञात ऐसी शक्ति तरंगे प्रवाहित होती हैं, जो हर जड़ और चेतन वस्तु पर जीवनदायी परिणाम करती हैं।

अग्निहोत्र का पात्र उल्टा स्टेप पिरामिड है। मिश्र के पिरामिड़ों से कहीं अधिक प्रभावशाली। अग्निपात्र के अन्दर मौजूद बायोकॉस्मिक एनर्जी या सूक्ष्म शक्तियां समूचे वातावरण पर स्वास्थ्यप्रद परिणाम

करती हैं। साथ ही ब्रह्माण्डीय किरणों को भी यह अग्निपात्र आकर्षित करता है।

अग्निहोत्र द्वारा निर्मित तुष्टि–पुष्टिदायक शुद्ध वायु को इस पात्र का यह आकार तत्काल सारे वायुमण्डल में प्रसारित करता है। बारह घण्टे तक वायुमण्डल को शुद्ध, स्वच्छ, रोगाणुओं एवं प्रदूषण से मुक्त रखता है।

अग्निहोत्र का समय

सूर्योदय–सूर्यास्त के संधिकाल का असर हर जड़–चेतन वस्तु पर अच्छा या बुरा होता है। इन समयों पर पूरे वातावरण में एक विशिष्ट तरह के कम्पन उत्पन्न होते हैं। इसी समय पेड़–पौधों के शरीर में अनेक रासायनिक परिवर्तन होते हैं। सूर्यास्त के समय जहरीली गैसों, प्रदूषक तत्वों एवं रोगजनक कीटाणुओं के जो हमले उन पर होते हैं उनसे फसल का बचाव होता है।

अग्निहोत्र ठीक इन्हीं समयों पर किया जाता है ताकि फसल को स्वास्थ्य लाभ हो, रोगों से बचाव हो और वायुमण्डल पर गहरा शोधक प्रभाव हो। समय पर अग्निहोत्र नहीं करें तो यह तीनों लाभ हमें नहीं मिलेंगे।इसलिए समय की पाबंदी से अग्निहोत्र करना अग्निहोत्र का दूसरा अनिवार्य अंग है।

सूर्योदय–सूर्यास्त का सही समय आपके शहर या गांव के अक्षांश–रेखांश पर निर्भर करता है। मौसम कार्यालय या वेधशाला से आप अपने शहर का स्थानीय समय प्राप्त कर सकते हैं या फिर

माधवाश्रम को लिखें या मिलें और पूरे वर्ष का सूर्योदय–सूर्यास्त समय का पर्चा प्राप्त करें।

ध्यान रहे, **अग्निहोत्र समय की साधना** है। समय से अग्निहोत्र करने के लिए रोज अपनी घड़ी रेडियों टाइम से मिलाकर रखें। रेडियो पर समाचारों के बाद जो बीप्–बीप् की आवाज आती है, उस समय सेकेन्डों से घड़ी मिलाई जा सकती है। समय पर अग्निहोत्र करने के लिए हमारे द्वारा वर्ष भर के सूर्योदय–सूर्यास्त का जो चार्ट उपलब्ध कराया जाता है, क पया अपेक्षित परिणाम पाने के लिये इसी चार्ट के अनुसार अग्निहोत्र करें।

अपना पता लिखकर डाक टिकट लगा लिफाफा भेजें तो चार्ट आश्रम द्वारा मुफ्त भेजा जाता है।

अग्नि : गोबर के कंडो का

पिरामिड आकार के मिट्टी या तांबे के पात्र में सूर्योदय या सूर्यास्त के समय से दस मिनिट पहले गाय या बैल के गोबर से बने कंडों या उपलों को कपूर, रूई की बत्ती या कुंदरू गोंद से जला कर रख दें। गाय के गोबर के इन कंडों के छोटे–छोटे टुकड़े कुण्ड या पात्र में इस तरह रखें कि उन्हें हवा मिल सकें। कण्डों के टुकड़ों को कुण्ड में एक के ऊपर एक गोलाकार जमाएं कि बीच में खाली जगह रहे। इस खाली जगह में कपूर गूगल या फूलबत्ती रखकर जला दें। अग्निहोत्र के समय तक यह अग्नि प्रज्वलित हो चुकना चाहिए।

गाय के गोबर में मेन्थाल, फेनाँल, अमोनिया, इन्डाल तथा

फार्मेलिन जैसे अनेक औषधि तत्व होते हैं। अग्निहोत्र कि लिए गोबर के कण्डें खुद बनाए। इस प्रकार कि उनमें कूड़ा कर्कट, कंकड मिट्टी न लगी हो। कंड़ों को जलाने के लिए गैस चूल्हे घासलेट या पेट्रोल–डीजल इत्यादि प्रदूषक तत्वों का प्रयोग कदापि न करें।

आहुति : गाय का घी और चांवल

ऑपरेशन थियेटर तथा ऑपरेशन के औजारों को कीटाणुरहित (स्टेरिलाइज) करने के लिये डॉक्टर फार्मेलिन गैस का इस्तेमाल करते हैं। दो बून्द गाय के घी और चुटकी भर चावलों की आहुतियां देने पर अग्निहोत्र से यही रसायन उत्पन्न होकर हवा में फैलकर वातावरण को रोगाणु मुक्त करता है। अग्निहोत्र से कई शुद्धिकारक वायु निर्माण होते हैं जिनमें से कुछ का प थक्करण इस प्रकार हुआ है– एथिलीन ऑक्साइड, प्रापिलीन ऑक्साइड, फार्मलडिहाइड, बीटा प्रापियो लेक्टोन।

गोघ त और चांवलों से उत्पन्न रसायनों का वायुरूप मिश्रण सांस द्वारा पौधे ग्रहण करते हैं। यह शुद्ध व औषधि वायु उन्हें मजबूत करती है। परिणाम स्वरूप उन्हें राहत मिलती है। अग्निहोत्र का तीसरा आवश्यक अंग गाय का शुद्ध घी (सिर्फ दो बून्द) तथा अक्षत कच्चे चांवल दो चुटकी लेकर इन्हें मिलाकर, इनके दो हिस्से करके दो आहुतियां देना है। न कम न ज्यादा।

मंत्र : ध्वनिकम्पन

सूर्यास्त के समय कहें –

अग्नये स्वाहा (पहली आहुति अग्नि में डालते हुए कहें)

अग्नये इदं न मम।

प्रजापतये स्वाहा (दूसरी आहुति अग्नि में डालते हुए कहें)

प्रजापतये इदं न मम।

शाम की अग्निहोत्र विधि समाप्त हुई।

सूर्योदय के समय कहें–

सूर्याय स्वाहा (पहली आहुति अग्नि में डालते हुए कहें)

सूर्याय इदं न मम।

प्रजापतये स्वाहा (दूसरी आहुति अग्नि में डालते हुए कहें)

प्रजापतये इदं न मम।

सुबह की अग्निहोत्र विधि समाप्त हुई।

अग्निहोत्र के मंत्रों का अर्थ-

हे प्रभु ! जो भी मेरे पास है वह तेरा है और तुझे ही समर्पित है।

इन वेद मंत्रों के उच्चारण से निकलने वाली ध्वनि का गहरा संबंध सूर्योदय–सूर्यास्त के समय से है। जैसे शास्त्रीय राग–रागिनियों का उनके निर्धारित समय पर गाने से ही प्रभाव होता है, ठीक यही बात इन अग्निहोत्र मंत्रों पर भी लागू होती है। इन मंत्रों का संबंध

पिरामिड की रहस्यमय शक्तियों तथा प्रज्वलित अग्नि की ऊर्जा से घनिष्ठ है। वेदोक्त अग्निहोत्र के मूल मंत्रों 'ओम' शब्द नहीं है, अतः इन मंत्रों में अपनी ओर से 'ओम' ध्वनि न जोड़ें और न ही इन मंत्रों का क्रम बदलें। इन वेद मंत्रों का उच्चारण जैसे वे ऊपर दिए हैं उसी ढंग से करें। यह ध्वनि कम्पनों का वह फार्मूला है जिसका संबंध अग्निहोत्र से है। इसीलिए इन मंत्रों का अनुवाद करने से या इनमें कोई परिवर्तन करने से अग्निहोत्र का फार्मूला बदल जाता है और इष्ट परिणाम नहीं होते।

इन मंत्रों में "अग्नि" और "सूर्य" शब्द ईश्वर वाचक हैं। अग्निहोत्र के मंत्र उस एक ईश्वर शक्ति की उपासना के मंत्र हैं। ध्यान रहे अग्निहोत्र सूर्य की या अग्नि की पूजा नहीं है।

अग्निहोत्र शुरु करने के सन्दर्भ में आपकी जो भी समस्याएं हों, अड़चने हों, प्रश्न या शंकाए हो, उन सबका निराकरण अवश्य कर लें। माधवाश्रम आकर मिलें, अग्निहोत्र से संबंधित अपने सभी प्रश्नों का समाधान माधवाश्रम में मिलेगा। सुबह सूर्योदय से लेकर शाम सूर्यास्त तक, सप्ताह के किसी भी दिन आप माधवाश्रम आ सकते हैं, माधवाश्रम के स्वयं सेवक आपको तत्पर मिलेंगे।

व्याहृति होम

यह अग्निहोत्र की तरह नित्य नहीं नैमित्तिक होम है। हर क षि संबंधी कार्य के पूर्व व पश्चात् इसे किया जाए यही इसका समय है। अग्निहोत्र के पात्र के निकट उसी आकार के दूसरे पात्र में व्याहृति होम करने के लिए गाय के गोबर के कण्डे सिलगायें। इस होम के लिए चार वेद मंत्र है जो इस प्रकार हैं।

भूः स्वाहा, अग्नये इदम् न मम।
भुवः स्वाहा, वायवे इदम् न मम।
स्वः स्वाहा, सूर्याय इदम् न मम।
भूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदम् न मम।

प्रत्येक मंत्र कहते समय स्वाहा के उच्चारण पर सिर्फ एक बूंद गाय का घी अग्नि में डालें। इस यज्ञ में घी के अलावा अन्य किसी भी पदार्थ की आहुति नहीं देनी है, सिर्फ चार बून्द गाय का घी। भूः, भुवः, स्वः इन तीनों शब्दों का आशय क्रमशः भूमंडल, वायुमंडल और आकाश या अवकाश है। अंत में चौथी आहुति इन तीनों व्याहृतियों का उच्चारण एक साथ करके अग्नि वायु और सूर्य के जो जनक हैं उन प्रजापति ईश्वर के प्रति क तज्ञता व्यक्त की जाती है। कुछ लोग इसे मंगल–हवन भी कहते है। इसका उद्देश्य भी मंगल–कामना ही है।

ये चार बूंद घी जलकर वायुरूप होने तक यानी 3–4 मिनिट तक वहीं बैठना है। होम के पात्र को उठाकर उचित स्थान पर रखा जा सकता है, अग्नि शांत होने के पश्चात्। स्त्री, पुरूष बच्चे, पढ़े–अनपढ़ सभी इसे आसानी से कर सकते हैं।

त्र्यम्बकम् यज्ञ

अग्निहोत्र कृषि में संधिकालों का बडा महत्व है। रोज सूर्योदय–सूर्यास्त के संधिकालों में अग्निहोत्र किया जाता है उसी तरह पाक्षिक संधिकालों अर्थात् अमावस्या–पूर्णिमा को भी यह विशिष्ट यज्ञ किया जाता है।

इस यज्ञ का सिर्फ एक ही मंत्र है, वह इस प्रकार है–

ओम् त्र्यंबकम् यजामहे सुगंधिम्
पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्
मृत्योर मुक्षीय मामृतात् । स्वाहा ।

पूरा मंत्र बोल कर "स्वाहा" बोलते समय प्रज्वलित अग्नि में सिर्फ एक बूंद गाय का घी डालना है। पुनः मंत्र बोलना है और स्वाहा पर एक बून्द घी डालना है। ऐसा लगातार करना है। घर के परिवार के सभी लोग इस मंत्र को याद कर लें, तो सिर्फ चार लोग आधा आधा घंटा देकर दो घंटे का यज्ञ कर सकते है। चार घन्टा कर सकते हैं। एक घंटे के यज्ञ के लिये सिर्फ 50 ग्राम गाय का घी लगेगा। यानी चार घन्टे के यज्ञ के लिए केवल 200 ग्राम घी पर्याप्त है। कम से कम चार घन्टे तो यह यज्ञ खेत में होना ही चाहिए। यदि अधिक लोग उपलब्ध हो सकें तो 12 घंटे 24 घंटे का करना अच्छा रहता है। दीर्घ कालीन यज्ञ करते समय ध्यान रहे कि सायं–प्रातः अग्निहोत्र का समय उपस्थित होने पर यज्ञ को रोक दें। समय पर अग्निहोत्र करें और आहुति भस्म होते ही पुनः महाम त्युंजय यज्ञ शुरू

कर दें।

इस यज्ञ के लिए ईटों से जमीन में भी चौकोर पात्र बनाया जा सकता है, पात्र में राख अधिक होने पर उसे निकालते रहना चाहिए और नये कण्डे लगाकर अग्नि लगातार इतना प्रज्वलित रखना चाहिए कि एक बूंद आहुति से लौ या धुंआ निकले।

यह यज्ञ भी प्रदूषक, हानिकारक तत्वों और रोगाणुओं को प्रतिबंधित करता है। इसे अनेक लोग मिलकर सामूहिक रूप से कर सकते हैं। आहुति एक ने ही देनी है अन्य मंत्रोच्चारण साथ साथ करें।

चाहे चार घंटे का हो या चौबीस घन्टे का "त्र्यम्बकम् यज्ञ" की शुरूआत" "व्याहृति–होम" से करते हैं और यज्ञ का समापन भी व्याहृति मंत्रों से होम कर के किया जाता है।

यदि अमावस्या पूर्णीमा को न कर सकें तो खेती में हल–बखर बोनी कटनी आदि क षिकार्य चलने तक तो अवश्य ही करें। इसका फसल पर अच्छा प्रभाव पडता है।

नित्य अग्निहोत्र और समय समय पर ये दो नैमित्तिक यज्ञ और इनकी भस्म यही अग्निहोत्र क षि का आधार हैं। यही वास्तविक वैदिक क षि पद्धति है।

हमारे अन्य प्रकाशन

अंग्रेजी

1.	In Search of Happiness	....	50.00
2.	The Last Step	....	10.00
3.	Dharmpath	....	70.00
4.	How to perform Agnihotra	....	3.00
5.	Agnihotra	....	20.00

हिन्दी

1.	सुख की खोज में	....	60.00
2.	धर्मपाठ	....	70.00
3.	सप्तश्लोकी (संस्कृत पदों की हिन्दी अनुवाद एवं स्पष्टीकरण सहित व्याख्या)	....	10.00
4.	महानुभाव का अद्‌भुत् दर्शन	....	100.00
5.	परमसद्‌गुरू	....	200.00
6.	धर्मपाठ के सार वचन	....	5.00
7.	भ्रमर गान	....	5.00
8.	मठ मन्दिर मस्जिद गुरूद्वारा	....	10.00
9.	हम तो ईश्वर सेवक हैं	....	10.00
10.	अग्निहोत्र	....	40.00
11.	आखिरी कदम	....	10.00
12.	अग्निहोत्र चिकित्सा	....	30.00
13.	साहब	....	200.00
14.	अग्निहोत्र कृषि	....	50.00
15.	युग प्रवर्तक	....	60.00
16.	अग्निहोत्र कैसे करें	....	3.00

मराठी

1.	सुखाच्या शोधात	....	60.00
2.	धर्मपाठ	....	70.00
3.	शेवटचे पाऊल	....	3.00
4.	अग्निहोत्र	....	40.00

– डाक खर्च एवं पैंकिंग अलग

प्राप्ति स्थान

माधवाश्रम, सीहोर रोड, बैरागढ़, भोपाल – 462 035

अग्निहोत्र : कृषि क्रान्ति

"The Secret Life of Plants" (पौधों का रहस्यमय जीवन) नामक पुस्तक ने वनस्पति जगत् के क्षेत्र में दिलचस्पी रखने वाले लोगों में हलचल मचा दी थी। इसी पुस्तक के लेखक द्वय श्री क्रिस्टोफर बर्ड तथा पीटर टाम्पकिन्स अपनी नई पुस्तक "Secrets of the soil" (मिट्टी के रहस्य) में ***अग्निहोत्र कृषि पद्धति*** के बारे में लिखते हैं –

"You can grow superior crops with the help of AGNIHOTRA FARMING, without chemical fertilisers, pesticides, and herbicides. This ancient science invigorates the cells of plants and helps the reproductive cycle."

अर्थात्, ''रासायनिक खादों, कीट तथा खरपतवारनाशी रासायनिक दवाओं के बिना भी, केवल ***अग्निहोत्र कृषि पद्धति*** अपनाकर आप आज से बेहतर फसल उगा सकते हैं। यह प्राचीन ज्ञान-विज्ञान पौधों में नई जान डालता है तथा उनकी उत्पादन क्षमता में वृद्धि करता है।''

(देखिए "Secrets of the soil" जून 1989 का संस्करण,
– प्रकाशक हार्पर एण्ड रो, न्यूयार्क, अमेरिका)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

1. महानुभाव श्री माधवजी संस्थान,
माधवाश्रम, सीहोर रोड, बैरागढ़, भोपाल (म.प्र.) - 462035

2. डा. रामाश्रय मिश्रा
137, अग्निहोत्र नगर, मकड़ीखेड़ा, पो. ख्यौरा,
नवाबगंज, कानपुर (उ.प्र.)

मुद्रक : गीता आफसेट. 9826011207